R.N.I. No. 2321/57
दिसम्बर 2018

ओ३म्

रजि. सं. MTR नं. 04/2016-18
अंक 11

तपोभूमि

मासिक

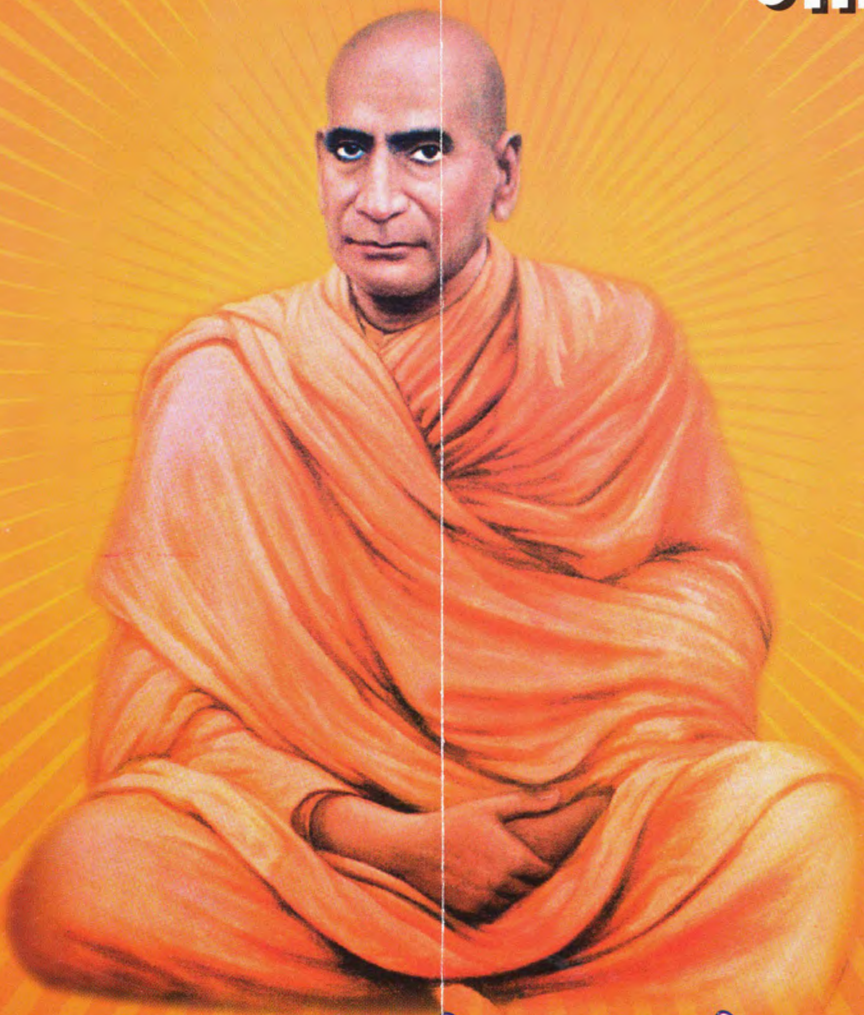

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती
(1856–1926)
23 दिसम्बर बलिदान दिवस

सम्पादकीय

श्रद्धा की प्रतिमूर्ति थे स्वामी श्रद्धानन्द

संसार में प्राय: करके वही लोग अपने जीवन के उन्नत शिखर पर आरुढ़ होते हैं जो सत्य का ज्ञान होने पर जीवन में उसका आचरण भी आरम्भ कर देते हैं। भगवती श्रुति ने भी कहा है कि **श्रद्धया सत्यमाप्यते** अर्थात् श्रद्धा से ही सत्य की प्राप्ति होती है। जीवन की उन्नति का आधार सत्य को अपने अन्दर आत्मसात् कर लेना है परमात्मा को भी सत्यस्वरूप कहा है। इसलिए युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने परमात्मा की स्तुति का नाम सत्यभाषण रखा। वेद में कहा ही गया है **सत्येन उत्तभिता भूमि** अर्थात् पृथ्वी आदि लोक लोकान्तरों का नियमित संचालन सत्य के द्वारा ही हो रहा है। इसलिए जो भी मनुष्य इस सत्य की धारणा को अपने अन्दर धारण कर लेता है वही कल्याण मार्ग का पथिक बन जाता है। हमारे चरित्रनायक स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इस बात का अक्षरश: पालन किया और वे एक साधारण जीवन जीने वाले मुंशीराम से असाधारण व्यक्तित्व के धनी स्वामी श्रद्धानन्द बन गये। उन्होंने बरेली में जब प्रात: स्मरणीय महर्षि दयानन्द सरस्वती के दर्शन किये और उनके प्रवचन सुने तो उनके हृदय में स्वामी दयानन्द के व्यक्तित्व को देखकर अगाध श्रद्धा उत्पन्न हुई और उन्होंने महर्षि महर्षि दयानन्द द्वारा बताये पथ का अनुसरण करने की दृढ़ता से प्रतिज्ञा की। केवल प्रतिज्ञा ही नहीं की अपितु उसका निर्वहन भी किया जिससे पतित मुंशीराम पतित पावन श्रद्धानन्द बन गये। उन्होंने अपने ज्वलित व्यक्तित्व के द्वारा सहस्रों जीवनों में प्रकाश का संचार कर दिया जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण गुरुकुल विश्व विद्यालय कांगड़ी सहित अनेकों गुरुकुलों का उत्तम इतिहास साक्षी है। जहां से निकले हजारों ब्रह्मचारियों ने देश की स्वतंत्रता में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया तथा पवित्र वेदवाणी का घूम-घूमकर प्रचार किया। स्वामी श्रद्धानन्द ने न केवल गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का मार्ग प्रशस्त किया, उन्होंने भारत की स्वतंत्रता में भी अपना उल्लेखनीय योगदान दिया। जलियां वाले बाग का क्रूरतम हत्याकाण्ड होने के बाद कोई भी भारतीय नेता अंग्रेजों की नीतियों के खिलाफ आन्दोलन करने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था तब स्वामी श्रद्धानन्द ने कांग्रेस का सफल अधिवेशन कराया। दिल्ली में जन आन्दोलन का नेतृत्व करते हुए जब अंग्रेज अधिकारी ने गोली से मारने की धमकी दी तो उन्होंने जन समूह के आगे बढ़कर अंग्रेज अधिकारी को ललकारते हुए अपना सीना खोलकर के कहा कि तुम अपनी संगीनें खोलो हमने सीना खोल दिया। उनकी इस वीरतापूर्ण गर्जना को सुनकर अंग्रेज अधिकारी हक्का-बक्का रह गया और उसने अपने सिपाहियों को तने हुए हथियारों को नीचे करने का आदेश दिया। भारत के लौहपुरुष पूर्व गृहमंत्री सरदार बल्लभभाई पटेल ने कहा था कि मैंने अपने जीवन में पहली बार वीरता के साक्षात् दर्शन किये।

इस प्रकार देखा जाये तो समाजसेवा के प्रत्येक क्षेत्र में स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अद्भुत कार्य किये। इसका सारा श्रेय उनकी सत्य के प्रति अटूट निष्ठा ही को जाता है। स्वामी दयानन्द के संसर्ग ने उनके जीवन के कल्याण का मार्ग खोल दिया। उन्होंने इस बात को बड़ी कृतज्ञता के साथ अपने जीवन चरित्र के लेखन से पूर्व

-शेष पृष्ठ सं0 35 पर

तपोभूमि

ओ३म् वयं जयेम (ऋक्0)

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक कल्याण की साधिका

(आर्य जगत में सर्वाधिक लोकप्रिय मासिक)

वर्ष–64 | संवत्सर 2075 | दिसम्बर 2018 | अंक 11

संस्थापक
स्व0 आचार्य प्रेमभिक्षु

संपादकः
आचार्य स्वदेश
मोबा. 9456811519

दिसम्बर 2018

सृष्टि संवत्
1960853119

दयानन्दाब्दः 194

प्रकाशक
सत्य प्रकाशन
आचार्य प्रेमभिक्षु मार्ग
मसानी चौराहा, मथुरा (उ0 प्र0)
पिन कोड–281003

दूरभाषः
0565–2406431
मोबा 0 9759804182

अनुक्रमणिका

लेख–कविता		पृष्ठ संख्या
वेदवाणी	–डॉ0 रामनाथ वेदालंकार	4
विरजानन्द प्रकाश	–भीमसेन शास्त्री विद्याभूषण	5–8
सत्य धर्म की खोज	–बाबू सूरजभान	9– 12
योग्यतानुकूल व्यवसाय का चुनना	–पं0 माधवराव	13–16
स्वास्थ्य चर्चा		17–20
रामपाल शैतान	–पं0 नन्दलाल निर्भय	21
पाते हैं ?	–स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती	22
अन्तिम वैदिक साम्राज्य	–स्वामी देवानन्द	23–25
देश मानसिक दिवालियेपन की ओर	–आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक	26–32
समाचार		33
चतुर्वेद पारायण यज्ञ		34

❋❋❋

वार्षिक शुल्क 150/–

पन्द्रह वर्ष के लिये शुल्क 1500/– रूपये

वेदवाणी

लेखकः डॉ० रामनाथ वेदालंकार

तुझसे बढ़कर क्रान्तद्रष्टा और मेधावी कोई नहीं

न त्वदन्यः कवितरो न मेधया धीरतरो वरुण स्वधानन्।
त्वं ता विश्वा भुवनानि वेत्थ स चिन्न त्वज्जनों मायी बिभाय।।

–अथर्व0 5। 11। 4

शब्दार्थः–

हे (स्वधावन् वरुण) स्वात्मनिर्भर वरुण! (न त्वत् अन्यः) न तुझसे अतिरिक्त अन्य कोई (कवितरः) अधिक कवि है, (न मेधया धीरतरः) न ही मेधा द्वारा अधिक मेधावी है। (त्वम्) तू (ता विश्वा भुवनानि) उन सब भुवनों को (वेत्थ) जानता है। (सः) वह (मायी जनः) मायावी जन (चित् नु) निश्चय ही (त्वत् बिभाय) तुझसे भय खाता है।

भावार्थः–

हे जगदीश्वर! आप अनेक नामों से पूजे जाते हैं, उनमें आपका एक नाम 'वरुण' भी है। आप भक्त जनों द्वारा वरण किये जाने से तथा सर्वश्रेष्ठ होने से वरुण कहलाते हो। आप सबसे बड़े 'कवि' भी हो क्योंकि आपने अमर वेदकाव्य की रचना है तथा आप क्रान्तद्रष्टा हो। आप से बढ़कर मेधावी भी अन्य कोई नहीं है। ये रंगबिरंगी फूल–पत्तियाँ, ये हिमधवल पर्वत, ये अडिग चट्टानें, ये अविरल प्रवाह से बहती हुई नदियाँ, ये जल के पारावार समुद्र, ये श्यामल जल–भरे बादल, ये जलप्रपात, ये सूर्य–चन्द्र–तारे सब आपकी मेधा के साक्षी है। जो वस्तु जैसी होनी चाहिए वैसी ही आपने बनायी है।

हे वरुण! आप 'स्वधावान्' है, स्वात्मधारणशक्ति से युक्त हैं, स्वात्मनिर्भर हैं। आप इस जगती की रचना और पालना के लिए किसी सहायक की अपेक्षा नहीं रखते हैं। आप अकेले ने ही ग्रह और सितारों के रूप में चमकनेवाले असंख्य लोकों की सृष्टि की है और इनकी व्यवस्था भी आप अकेले ही कर रहे हैं। आप सब भुवनों के कण–कण की जानकारी रखते हैं। किस भुवन में क्या–क्या विशिष्ट वस्तुएँ हैं, किस भुवन में प्राणियों के रहने योग्य स्थिति है, किसमें नहीं है, कौन–सा भुवन ठोस, द्रवरूप या गैसों का पिण्ड है यह सब भी आपको ज्ञात है। किस भुवन को किस दिशा में चलना चाहिए, जिससे वह दूसरे भुवन से टकरा न जाये इस सबका ज्ञान भी आपको है।

हे वरणीय प्रभु! सज्जन आपकी आराधना करते हैं, आपके सामीप्य में आनन्द का अनुभव करते

शेष पृष्ठ सं0 12 पर

गतांक से आगे–

विरजानन्द प्रकाश

लेखकः भीमसेन शास्त्री विद्याभूषण

संस्कृत पाठशालाओं में प्रतिपदा को अनध्याय होता है। दण्डीजी का मथुरा का अध्यापन–काल भी आज से 114 वर्ष पूर्व प्रारम्भ हुआ था। पर उस महारूढ़िवादी काल में भी वे वृथा रूढ़ियों से स्वतन्त्र थे। वे प्रतिपदा को भी पढ़ाते थे। एक दिन वे पुरुषोत्तम चौबे को सन्था दे रहे थे कि एक विद्वान् आ गये और कहने लगे–"आप प्रतिपदा के दिन भी पढ़ाते हैं। प्रतिपदा को तो पढ़ी विद्या नष्ट हो जाती है। देखो वाल्मीकीय रामायण में लिखा है कि हनुमान ने कहा था–उस समय माता सीता ऐसी शिथिल दिखाई देती थीं, **जैसे कि प्रतिपदा के दिन पढ़ाई हुई विद्या।"**

विरजानन्द ने कहा–"यह सर्वथा असम्भव है। वाल्मीकि ऋषि ऐसी अयुक्त बात कभी नहीं लिख सकते।"

दण्डीजी ने उसी समय पुरुषोत्तम चौबे से रामायण मंगवाई। उसमें लिखा था–**"सीता उस समय ऐसी शिथिल दिखाई देती थीं, जैसी अनभ्यस्त विद्या।"**

अब दण्डीजी के हर्ष का पारावार न रहा। वे कहने लगे–"देखो, हमने कहा था न कि ऋषिजन ऐसी अनर्गल बात कभी नहीं लिख सकते।"

विरजानन्द शिष्य की योग्यता परख कर कभी–कभी अष्टाध्यायी को प्रतिलोम क्रम (अन्तिम सूत्र से प्रारम्भ करके) से भी पढ़ाते थे।

छात्रों को पढ़ाते हुए यदा–कदा, देश–दशा, धर्म की आड़ में पाखण्ड आदि की भी पर्याप्त आलोचना हो जाती थी। वे कारणों का निर्देश करके निवारण का उपाय भी बताते थे।

वे कभी–कभी छात्रों से कहा करते थे–**"मैं इस समय जिस अग्नि को धूमाकार में तुम्हारे हृदयों में अनुप्रविष्ट करा रहा हूं, समय पाकर, वह प्रचण्ड प्रज्वलित अग्नि का रूप धारण करके भारत के मत–मतान्तरों को भस्मीभूत कर देगी।"**

कुछ अन्य बातें

विरजानन्द की प्रायः प्रत्येक बात वैचित्र्यपूर्ण थीं।

उनके आहार में विलक्षणता थी। उनका भोजन सदा एक–सा न होता था। किसी दिन कुछ खाकर रह जाते थे, किसी दिन कुछ अन्य। कभी केवल दूध पीकर रह जाते थे। कभी केवल फलों पर (निरे खरबूजे, आम या नारंगी पर)। प्रायः उनके भोजन में नवीनता होती थी। भोजन–द्रव्य सदा उत्कृष्ट कोटि एक बार शुण्ठी–चूर्ण के धोखे में **एक तोला संखिया** खा गए। इससे मरणासन्न हो गए। सिर पर शीतल

जल डालना व डलवाना प्रारम्भ किया। यह प्रयोग दीर्घकाल तक चलता रहा। कुक्कुटासन व मयूरासन भी पर्याप्त समय तक लगाए।

अनेक श्रेष्ठ वैद्य उनके शिष्य थे और सेवा अवसर को अहोभाग्य समझते थे, पर वे अपनी चिकित्सा स्वयं कर लेते थे। एक बार गंगातट–वास के दिनों में शरीर सूख गया था। उन्होंने एक औषध विशेष की साधना से अपने रोग का निवारण किया। शरीर के एक भाग की त्वचा भी उतर गई। काया–कल्प हो गया।

दिन में विश्राम सर्वथा न करते थे। आयु के अन्तिम भाग में अतिवृद्धावस्था में संभवतः मध्याह्न भोजन के अनन्तर अल्प विश्राम करने लगे थे। रात्रि में भी निद्रा कम लेते थे। पढ़ाने से भिन्न उनका समय नित्य–कृत्य योगाभ्यास व शास्त्र–मनन के समर्पित था।

वीणा–वादन में बड़े निपुण थे। निर्मूल रूढ़ियों के शत्रु थे। उन के सारे कार्य समाखे (आंखोंवाले) मनुष्य के समान होते थे। कलश से जल लेते समयएक बिन्दु भी न गिरता था। सीढ़ियों पर चढ़ते–उतरते, मार्ग में आने–जाने में किसी का सहारा न लेते थे।

अलवर में एक बार छात्र प्रेमसुख के साथ जा रहे थे। मार्ग में नहर पड़ा। छात्र ने सावधान किया–'नहर आ गई है।' इस सूचना ने उन्हें कुपित कर दिया। उन्होंने अनेक बार नहर के आर–पार चक्कर लगाये। प्रेमसुख चकित रह गया।

कभी किसी ग्रन्थ में कोई प्रसंग ढूंढ़ते समय छात्रों को देर लगती तो स्वयं ग्रन्थ हाथ में लेकर तुरन्त उस स्थल को निकाल देते थे। सब द्रष्टा चमत्कृत हो जाते थे। विद्वानों का वे बड़ा आदर करते थे। उनके भाषण में सदा शिष्टता होती थी। ब्राह्मणों के नाम में दास शब्द से वे चिढ़ते थे। कहते थे–'ब्राह्मण कभी दास नहीं हो सकता।'

आस्तिकता, ऋषिभक्ति के साथ देशभक्ति, आत्मविश्वास, तेजस्विता, सत्यभाषण, सब गुण पूर्ण मात्रा में थे, पर दुरभिमान, एषणा, लालसा आदि का स्पर्श भी न था। वे आदर्श विरक्त संन्यासी थे। पूर्वाश्रम–सम्बन्धियों से मिलना न चाहते थे, वस्त्र बहुत कम पहिनते थे।

देश में फैली विभिन्न कुरीतियों, धार्मिक विडम्बनाओं के सम्बन्ध में उपाय बताये हुए कहते थे–**"अनार्ष–ग्रन्थों को हटाओ। आर्ष ग्रन्थ पढ़ो। ये सब दोष स्वयं दूर हो जायेंगे। 'छिन्ने मूले नैव फलं न पुष्पम्।"**

अनेक नरेश समय–समय पर उनसे धर्मादि–विषयक शंकाओं का समाधान पूछा करते थे। जयपुर–नरेश की ओर से ऐसी पृच्छायें प्रायः होती थीं।

ऋषि दयानन्द अन्तिम मिलन तक अपनी शंकायें उनसे समाहित करते रहे थे।

निर्वाण
(सं0 1925)

दण्डीजी को उदरशूल रहता था। वे स्वयं उत्कृष्ट वैद्य थे। मथुरा में उस समय सरकारी डाक्टर एक ही था। अन्य प्राइवेट प्रेक्टिशनर न थे, पर अनेक उत्तमोत्तम वैद्य थे। सेठ गुरुसहायमलजी के कुल–वैद्यों में पण्डित दीनबन्धुजी उत्तम वैद्य थे और वे दण्डीजी के शिष्य थे। वे सदा दण्डीजी के सेवार्थ प्रस्तुत थे, एवं वैराग्यपुरा में पण्डित रामरत्नजी प्रसिद्ध वैद्य थे। दण्डीजी की सेवा को सभी अपना अहोभाग्य समझते थे। परन्तु दण्डीजी इन सबसे स्वयं पर अधिक विश्वास रखते थे। वे कहा करते थे–**"जिन दिन हम अपनी चिकित्सा स्वयं न कर पायेंगे, उसी दिन हमारी मृत्यु हो जायेगी।"** उनके पास अनेक वनस्पति, औषध सदा प्रस्तुत रहती थीं।

कहते हैं, दण्डीजी को अपनी मृत्यु का पूर्व ही ज्ञान हो गया था। **निर्वाण से दो वर्ष पूर्व छात्रों से कह दिया था–"अमुक दिन उदरशूल से मरूंगा।"** एक दो भक्त सेठ प्रतिवर्ष दर्शनार्थ उपस्थित होते थे। उनसे अन्तिम मिलन के समय मृत्यु से कुछ दिन पूर्व कह दिया था–**"फिर न आना।"**

मृत्यु से दो मास पूर्व अपनी पुस्तकें, भोजन, वस्त्र तथा 300) का उत्तराधिकार–पत्र (वसीयतनामा) पं0 युगलकिशोर के नाम लिखकर रजिस्ट्री करा दिया था।

उन्हें यह भी सन्तोष था कि उनका योग्य शिष्य स्वामी दयानन्द सरस्वती स्वप्रतिज्ञानुसार उनके जीवन की साध की पूर्ति में परायण हैं। ग्वालियर में भारत भर के विद्वानों के सामने भागवत का खण्डन, जयपुर के वैयाकरणों का मान–मर्दन, वैष्णवों के पाखण्डों का खण्डन, दिल्ली के धूर्त्त महापण्डित हरिश्चन्द्र की पराजय, पुष्कर में प्रचार, अजमेर में ईसाइयों की पराजय आदि समाचार उनके लिये परम सन्तोषप्रद थे।

ऋषि दयानन्द ने उनके अन्तिम दर्शन सं0 1923 मार्गशीर्ष (ख्री0 1866 नवम्बर या दिसम्बर) में किये थे। मुमुक्षुवर्य गुरुवर्य का हार्दिक आशीर्वाद लेकर हरिद्वार के कुम्भ के मेले में प्रचारार्थ गये थे। कुम्भ पर विशुद्धानन्दादि से शास्त्रार्थ, रामघाट पर कृष्णानन्द से शास्त्रार्थ, कर्णवास में अम्बादत्त व हीरावल्लभ से शास्त्रार्थ, सोरों में अंगद शास्त्री का पराजित होकर प्रचार–कार्य में सहायक बन जाना आदि समाचार उनके लिए परम प्रीतिप्रद थे।

इस प्रकार दण्डीजी को सन्तोष था कि "प्रिय शिष्य दयानन्द द्वारा उनका अपना जीवन–लक्ष्य पूर्ण किया जा रहा है।"

इसी प्रकार ईश्वर–भक्ति तथा आर्ष–ग्रन्थाध्ययन की पवित्र साधना में जीवन बिताते हुए नब्बे वर्ष की अवस्था में उदरशूल से सं0 1925 आश्विन वदि13, सोमवार (14–9–1868) को श्री दण्डीजी ने विनश्वर देह का परित्याग किया।

उनके अन्तिम समय पं0 वनमाली आदि शिष्यगण रोने लगे तो दण्डीजी ने पूछा–"क्यों रोते हो?" शिष्यों ने कहा–"अब हमें अष्टाध्यायी कौन पढ़ायेगा?" दण्डीजी ने अष्टाध्यायी की पुस्तक मंगाई, और उसे हाथ में लेकर कहा–**"मैं इसमें प्रविष्ट होता हूं। जो कुछ पूछना हो इससे पूछना।"**

यह समाचार गंगातट पर वेदप्रचार–परायण परमहंस दयानन्द ने शहबाजपुर में कार्तिक मास में सुना। पूर्ण वीतराग होते हुए भी तुरन्त वज्राहत के समान स्तब्ध रह गये। शोक का आवेग कुछ न्यून होने पर कहने लगे–"व्याकरण का सूर्य अस्त हो गया।" मदनकोष में विरजानन्द के वर्णन में लिखा है कि–"उस दिन दयानन्द ने जल भी ग्रहण नहीं किया।"

महर्षि दयानन्द जैसे महान् योगी व उत्कृष्ट पण्डित ने अपने सर्वग्रन्थों की पुष्पिका में स्वयं को विरजानन्द का शिष्य लिखा है। विरजानन्द के जीवनकाल में उनके किसी यन्त्र–चित्र (फोटो) लिये जाने का पता नहीं चलता, पर उनके शव की शयान–अवस्था में छवि ली गई थी। उस चित्र की एक प्रति ऋषिभक्त श्री म0 मामराजजी खतौली (मुजफ्फरनगर) के पास सुरक्षित है। पं0 युगलकिशोरजी ने उस चित्र के आधार पर दण्डीजी की आसीन अवस्था का चित्र किसी चित्रकार से तैयार करवाकर प्रसिद्ध किया। इस चित्र में सिर व धड़ तो शव के यन्त्र–चित्र से लिये गये हैं, और नीचे का भाग कलमी चित्र है। युगलकिशोरजी की सच्ची गुरुभक्ति ने उन्हें गुरु–ऋण से अनृण कर दिया।

विरजानन्द का नश्वर देह तो नष्ट हो गया, पर महापुरुषों का जन्म होता है, मृत्यु नहीं। वे अपने कार्यरूप देह (यशःशरीर) से सदा जीवित रहते हैं।

पर इस विषय में महती कर्तव्यता आर्यसमाज पर है। वह कर्तव्य–परायण हो, तो विरजानन्द और दयानन्द आज भी जीवित हैं, और नहीं तो दूसरा पक्ष बना–बनाया है। अर्थात् विरजानन्द व दयानन्द को जीवित रखना अथवा मार देना आर्य–नेताओं के हाथ में है। हमें दुःख है कि आजकल दूसरा पक्ष ही प्रबलतर दिखाई दे रहा है। कुछ उच्चतम पौराणिक विद्वान् तो आर्ष–व्याकरण का समर्थन व प्रचार कर रहे हैं, पर अधिकांश आर्य–संस्थायें अनार्षग्रन्थों का प्रचार कर अपनी मृतविशिष्ट सत्ता–मात्र से परम परितुष्ट हैं। ❁❁❁

मेहनत की कमाई ही शुद्ध

महर्षि दयानन्द सरस्वती फर्रुखाबाद में रुके हुए थे। एक व्यक्ति दाल–चावल बनाकर लाया। गृहस्थ था एवं मजदूरी करके परिवार का पेट भरता था। स्वामी जी ने अन्न ग्रहण किया। यह देखकर ब्राह्मणों को बुरा लगा। वे बोले–इस हीन कुल के व्यक्ति का भोजन खाकर आप भ्रष्ट हो गए। स्वामी जी बोले–कैसे, क्या अन्न दूषित था? वे बोले–हाँ! स्वामीजी बोले– "अन्न दो प्रकार से दूषित होता है। एक तो वह, जो दूसरों को कष्ट देकर शोषण द्वारा प्राप्त किया जाता है। दूसरा वह, जहाँ कोई अभक्ष्य पदार्थ पड़ जाता है। इस व्यक्ति का अन्न तो दोनों ही श्रेणी में नहीं आता। इसका अन्न तो परिश्रम की कमाई का है। तब दूषित कैसे हुआ, मैं कैसे भ्रष्ट हो गया?

सत्साहित्य का प्रचार–प्रसार राष्ट्र की सर्वोत्तम सेवा है।

सत्य धर्म की खोज

लेखकः बाबू सूरजभान

आजकल सभी धर्मों के लोग अपने-अपने धर्म को ईश्वरप्रणीत और अन्य सब धर्मों को कपोलकल्पित तथा मिथ्या बतलाते हैं। इस तरह यदि सब मिलाकर एक सौ मत प्रचलित हों, तो दुनिया के लोग उनमें से 99 मतों को मनुष्कृत और अपने एक मत को ईश्वरकृत ठहराते हैं। इसका अर्थ यह होता है कि प्रत्येक मत को 99 मतवाले मनुष्यकृत या मिथ्या बतलाते हैं, सिर्फ एक उसी मत का माननेवाला उसे ईश्वर-वाक्य ठहराता है। परन्तु बदले में वह भी 99 मतों को मनुष्यों का गढ़ा हुआ ही कहता है। अर्थात् यह बात प्रायः सभी मतवाले स्वीकार करते हैं कि संसार में मनुष्यों के बनाये हुए मत भी प्रचलित हो जाते हैं, बल्कि बहुत करके तो संसार में मनुष्यों के ही रचे हुए मत प्रचलित हो गये हैं और प्रायः सौ में से 99 मनुष्य ऐसे ही मन-गढ़न्त मतों को मान रहे हैं। ईश्वरकृत सच्चे मत के माननेवाले तो बहुत ही कम हैं। इसका कारण भी सब मतोंवाले यही बतलाते हैं कि मनुष्य अपने गढ़े हुए मतों को भी अपनी मायाचारी से ईश्वरकृत बता देते हैं और झूठमूठ ही ऐसी कहानियां भी जोड़ लेते हैं कि जिससे उनका मत ईश्वर की तरफ से आया हुआ जाहिर हो। इस प्रकार दुनिया के लोग उनकी मनगढ़न्त बातों को ईश्वर-वाक्य मानने लगते हैं और उनके फन्दे में आकर वास्तविक ईश्वर-वाक्य को झूठ समझने लगते हैं। दुनिया के 100 में से 99 मनुष्य इसी धोखे में आये हुए हैं और हमारे मत को जो साक्षात् ईश्वर-वाक्य है, झूठा और मन-गढ़न्त ठहराते हैं।

अपने मत के अतिरिक्त 99 मतों की इस धोखेबाजी को तोड़कर उन्हें झूठा और बनावटी सिद्ध करने के लिए सभी मतोंवाले प्रकृति के नियमों को टटोलते हैं और उन 99 मतों में जो-जो कथन इन नियमों के विरुद्ध मिलते हैं, उनको असम्भव बतलाते हैं और इस तरह उनकी झुठाई पकड़कर दिखलाया करते हैं। परन्तु जब अपने मत का जिकर आता है तब इन नियमों को ताक में रखकर उसकी सभी असम्भव बातों को सत्य और निर्भ्रान्त बतलाने लगते हैं। बल्कि कोई-कोई तो इन असम्भव और अलौकिक बातों के कारण ही उसे ईश्वरप्रणीत सिद्ध करने लग जाते हैं। यह बात सब जानते हैं कि पुरुष और स्त्री के संयोग के बिना कभी गर्भ नहीं रह सकता है। इस प्राकृतिक नियम के सिवा अन्य किसी रीति से मनुष्य का उत्पन्न होना संभव नहीं है। गरज, इस नियम की सत्यता सभी मतवाले निर्विवाद रीति से स्वीकार करते हैं और इस नियम को अटल मानकर हिन्दू लोग ईसाईयों और मुसलमानों के इस कथन को कि ईसामसीह उत्पत्ति स्त्री-पुरुष के संयोग के बिना पवित्रात्मा से हुई थी झूठ ठहराते हैं और मुसलमान तथा ईसाई लोग हिन्दुओं के इन कथनों को असत्य ठहराते हैं कि पांडवों की उत्पत्ति सूर्य, इन्द्र, पवन

आदि देवताओं के सत्व से हुई थी और पार्वती ने शरीर के मैल से गणेशजी को बना दिया था। कहने का मतलब यह है कि दूसरे मतों का खण्डन करने के लिए तो सभी मतोंवाले मनुष्योत्पत्ति के इस नियम को बड़े जोर के साथ काम में लाते हैं, परन्तु जब इसी नियम से अपने मत का खण्डन होता है तब वे परमेश्वर की अलौकिक और अनन्त शक्ति का बहाना बनाने लगते हैं। कोई-कोई मत ऐसे भी हैं जो इन कथाओं को नहीं मानते हैं।

इस तरह की और भी हजारों बातें हैं कि जिनके द्वारा सभी मतोंवाले अन्य 99 मतों के कथनों को अप्राकृतिक और असम्भव सिद्ध करते और उन्हें झूठा ठहराते हैं, परन्तु अपने धर्म की जांच के लिए इन हजारों बातों में से किसी एक को भी काम में नहीं लाना चाहते हैं, बल्कि अपने धर्म को इन असम्भव और अप्राकृतिक कथनों के कारण ही ईश्वरकृत सिद्ध करने लग जाते हैं। जैसे ईसाई और मुसलमान लोग तो रामायण और महाभारत में वर्णित रामचन्द्र और कृष्ण आदि अवतारों के अद्‌भुत कृत्यों को प्रकृति विरुद्ध बतलाकर उनको झूठ कहते हैं और हिन्दूलोग ईसा मसीह के मरकर फिर कबर में से जिन्दा निकल आने, मुर्दों को जिन्दा करने और मुहम्मद साहब के चांद के दो टुकड़े कर देने आदि बातों को निरी गप बतलाते हैं। परन्तु जब स्वयं उनकी बारी आती है तब सभी मतोंवाले अपने-अपने मत की असम्भव और अप्राकृतिक बातों को ईश्वर की करामात बतलाते और उन्हीं के द्वारा अपने-अपने अवतारों की प्रतीत कराने लग जाते हैं। जैन, बौद्ध, सिख आदि सभी मतवालों का यही हाल है। इससे साफ जाना जाता है कि दुनिया के लोगों को न तो अपने लिए ही सत्य धर्म की खोज करनी है और न उन्हें दूसरों को ही सत्य धर्म सिखलाना है। बल्कि धर्मों के बीच में द्वेष और लड़ाई-झगड़े मचे रहने के कारण दुनिया के लोग आंख मींचकर बिना समझे-बूझे ही अपने-अपने धर्म की बड़ाई करते और दूसरे धर्मों की बुराई गाते रहते हैं। इस तरह प्रत्येक धर्म को पक्षपात और द्वेष ने बुरी तरह जकड़ रक्खा है।

इस पक्षपात और द्वेष से दुनिया में बहुत अशान्ति और दु:ख फैल रहे हैं तथा धर्म-सिद्धान्तों में भी बहुत गड़बड़ी पड़ गई है। इसलिए प्रत्येक मनुष्य को यदि संसार के अन्य मनुष्यों का दर्द नहीं है तो कम से कम उसे अपनी भलाई के लिहाज ही से सही कुछ समय के लिए पक्षपात और द्वेष को छोड़कर सत्य-मार्ग का अन्वेषण अवश्य ही करना चाहिए। इसके सिवा उसे अपने मन में यह सोचना चाहिए कि जब हम, औरों को उनके मतों की कलई खोलकर दिखलाते हैं और उनके मतों को झूठा और भ्रान्त कहकर उन्हें सत्यपथ पर लाना चाहते हैं, तब हम स्वत: ही सत्यमार्ग का अन्वेषण क्यों नहीं करते हैं। इस कथन का तात्पर्य यह है कि जब तुमने अपने बुद्धिबल से यह पता लगा लिया कि 100 में से 99 मत मनुष्यों के चलाये हुए हैं और वे सब ईश्वरकृत माने जाते हैं तथा उनके माननेवाले उन पर पूर्ण विश्वास रखते हैं, तब क्या यह सम्भव नहीं है कि जिस प्रकार 99 मतवाले गलती कर रहे हैं उसी प्रकार तुम भी गलती में पड़े हुए हो, अर्थात् तुम्हारा मत भी मनुष्यकृत ही हो और तुम भी उसी प्रकार की गलती से उसे ईश्वरकृत मान रहे हो जिस प्रकार कि 99 मतों के लोग मान रहे हैं? मतलब यह है कि जिस प्रकार तुम

दूसरे मतवालों को अपने-अपने मत की जांच करने को कहते हो उसी प्रकार स्वयं अपने मत की जांच क्यों नहीं करते हो? जब कि तुम स्वयं कह रहे हो कि दुनियां में 100 में 99 मनुष्य ऐसे हैं जो मनगढ़न्त मतों को ही पक्षपात और मोह के कारण ईश्वरकृत समझ रहे हैं और उनके कारण अपनी गर्दनें कटा रहे हैं तब क्या यह संभव नहीं है कि तुम भी ऐसे ही मोहजाल में फंसे हुए हो, अर्थात् तुम्हारा मत भी ईश्वरकृत न होकर, कोई दूसरा मत ही ईश्वरकृत हो कि जिसको तुम बिना जांचे ही मनुष्यकृत समझ रहे हो? इसी तरह क्या यह संभव नहीं है कि दुनियां में कोई भी मत ईश्वरकृत न हो, बल्कि सभी मत मनुष्यकृत हों और उन सबमें तुम्हारा मत बहुत घटिया और कोई अन्य मत सबसे बढ़िया (श्रेष्ठ) हो?

यह दुनियां में एकाध ही झूठा मत प्रचलित हो गया होता और दुनिया के सौ मनुष्यों में से एकाध मनुष्य ही उसका अनुयायी होता, तो बेशक तुमको अपने मत पर संदेह करने की कोई जरूरत नहीं थी; परन्तु जब तुम्हारे कथनानुसार सौ में 99 मत झूठे प्रचलित हो रहे हैं और 100 में 99 मनुष्य इन झूठे मतों के ही भक्त बन रहे हैं, अर्थात् जब अधिकतर मनुष्य भ्रम में पड़े हुए हैं, तब सबको ही अपने-अपने मत पर संदेह करने और उसकी पूरी-पूरी जांच पड़ताल करने की आवश्यकता है। झूठ की ऐसी बहुलता और प्रबलता होने पर भी यदि तुम सत्यासत्य की जांच नहीं करते हो, और अपने मत को उस कसौटी पर कसकर नहीं देखते हो जिस कसौटी से अन्य मतों को जांचते हो, तो कहना होगा कि तुम अपने आपको धोखा देना चाहते हो, अर्थात् तुम अपना कल्याण नहीं करना चाहते हो, बल्कि जबरदस्ती अपने धर्म को सच्चा कहकर और दूसरे धर्मों को झूठा बतलाकर अपने को पक्षपात और द्वेष के गहरे गडढे में डाले रखना पसन्द करते हो। इसमें सन्देह नहीं है कि धर्म के नाम से मनुष्यों में चिरकाल से भारी संग्राम होता रहने के कारण पक्षपात और द्वेष ने तुम्हारे हृदय में बड़ा गहरा घर कर लिया है। यह पक्षपात और द्वेष ही तुम्हारे रोम-रोम में घुस गया है कि जिसके सबसे तुम्हारे हृदय में से पाप-पुण्य का भय तथा सुख दु:ख और हानि लाभ का विचार ही निकल गया है और केवल यही एक खयाल बाकी रह गया है कि हमारी बात में फर्क न आने पावे, अर्थात् जिस धर्म को हम अपना बतला रहे हैं उसकी तो पताका फहराती रहे और अन्य धर्मों की प्रतिष्ठा फीकी पड़ जाय। परन्तु विचारशील और बुद्धिमान लोगों को यह पक्षपात और द्वेष छोड़ देना चाहिए और दूसरों की नहीं तो कम से कम अपने कल्याण की फिकर तो अवश्य ही रखनी चाहिए।

परन्तु धर्म के नाम पर नित्य दंगा-फसाद होते रहने से मनुष्यों का हृदय ऐसा कठोर बन गया है और आंखों पर पक्षपात और द्वेष का ऐसा मजबूत चश्मा चढ़ गया है कि उनको अपने-अपने धर्म की बुराई भी भलाई सी प्रतीत होती है और दूसरे धर्मों की भलाई भी बुराई का रूप धारण करके काटने को दौड़ती है। यह इस पक्षपात और द्वेष की महिमा है कि प्रत्येक मतवाले अपने-अपने धर्म को सच्चा और शेष 99 धर्मों को झूठा बतलाते हैं और जिन प्रमाणों से 99 मतवालों को झूठा ठहराते हैं उनको अपने मत के साथ नहीं लगाते हैं, बल्कि अपने मत को वे बिना प्रमाण के ही ईश्वरकृत मानते हैं और अपने मत

के लिए प्रमाण ढूँढ़ना पाप समझते हैं। इस पक्षपात और द्वेष के कारण मनुष्य अपने तथा पराये धर्मों की बातों से बिलकुल अनभिज्ञ होने पर भी यह कहने में जरा नहीं शरमाता है कि हमारे धर्म के जो सिद्धान्त होंगे वे सब सच्चे हैं और दूसरे सब धर्मों के सिद्धान्त भ्रान्त तथा लचर हैं। इस तरह प्रत्येक मतवाला अपने मत को कल्याणकारी और दूसरों के मत को पापजनक तथा नरक की ओर ले जानेवाला बतलाता है। धर्म के इस अंध पक्षपात के दृश्य नित्य ही देखने में आते हैं और सभी धर्मों के भोले लोग इस प्रकार की लीलायें दिखाया करते हैं बहुत से लोग तो यहाँ तक मूर्खता प्रकट किया करते हैं कि यदि किसी उलटे-पुलटे सिद्धान्त के विषय में उनको यह विश्वास दिला दिया जावे कि यह तुम्हारे धर्म का सिद्धान्त है, तो चाहे वह सिद्धान्त उनके धर्म के विरुद्ध ही क्यों न हो, वे उसे बिलकुल सच्चा समझकर उसका पूरा-पूरा पक्ष लेने लगते हैं; और यदि इसके विपरीत खास उनके धर्म के किसी अति उत्तम सिद्धान्त के विषय में यह बतला दिया जाय कि यह सिद्धान्त उनके धर्म का नहीं है तो वे उस सिद्धान्त को बिलकुल झूठा सिद्ध करके उससे द्वेष करने लग जाते हैं।

मतलब यह है कि इस समय मनुष्य पक्षपात और द्वेष का पुतला बन रहा है और इसे ही अपना परमधर्म समझ रहा है। अतएव बुद्धिमानों को उचित है कि वे पक्षपात और द्वेष को छोड़कर अपने प्रकृत लाभालाभ को देखें। ❁❁❁

पृष्ठ सं0 4 का शेष–

हैं, आपकी अगवानी करते हैं, आपका अभिनन्दन करते हैं, परन्तु मायावी लोग आपसे भयभीत होते रहते हैं। वे सोचते हैं कि आपके सामने उनकी माया की दाल नहीं गलेगी, इसलिए वे आपसे कतराते हैं, आपको सम्मुख देखकर उनकी चौकड़ी भूल जाती है। वे डर से काँपते हैं, थरथराते हैं, उनके सब मनसूवे धरे रह जाते हैं। वे आपको देखकर जड़वत् खड़े रह जाते हैं। हे प्रभु! आप हमें ऐसा वरदान दो कि हमसे भी मायावी लोग थर-थर काँपें। हम उन्हें बहिष्कृत करके अपने समाज को पवित्र रखने का गौरव प्राप्त कर सकें। ❁❁❁

पाठकों से विनम्र निवेदन

'तपोभूमि' मासिक पत्रिका के उन पाठकों से विनम्र निवेदन है जिन्होंने वर्ष **2017 का वार्षिक शुल्क** बार-बार के पत्र लेखन तथा फोन द्वारा सूचना देने के बाद भी अभी तक जमा नहीं कराया है वे वर्ष **2017** तथा **2018** का वार्षिक शुल्क अविलम्ब **'सत्य प्रकाशन'** वेदमन्दिर वृन्दावन मार्ग, मथुरा के कार्यालय को जमा करायें। अतः आपसे पुनः निवेदन है कि आप शीघ्रातिशीघ्र शुल्क भेजकर अपनी प्रत्येक माह की पत्रिका समयानुसार प्राप्त करते रहें। आशा है पाठकगण अविलम्ब शुल्क जमा करेंगे।

–व्यवस्थापक

योग्यतानुकूल व्यवसाय का चुनना

लेखकः पं0 माधवराव

हर मनुष्य के लिए किसी न किसी व्यवसाय, रोजगार, धंधे अथवा पेशे की आवश्यकता है और अपने लिए बुद्धिमत्तापूर्वक व्यवसाय चुनने में ही मनुष्य-जीवन का सफल होना न होना अवलम्बित है। ऐसे बहुत ही थोड़े हजारों में एक मनुष्य होंगे जिन्हें जीवन-निर्वाह के लिए कुछ उद्योग नहीं करना पड़ता अर्थात् जिनके पास आवश्यकता से बहुत ही अधिक सम्पत्ति होती है। परन्तु ऐसे मनुष्यों के भी अपने लिए कुछ न कुछ कार्य चुनने की आवश्यकता पड़ती है। इसका कारण यह है कि ऐसे मनुष्यों को उदरपूर्ति के लिए भले ही कष्ट न उठाना पड़े, परन्तु अपने जीवन को सुखमय बनाने के लिए तथा उसे आलस्य से बचाने के लिए, इच्छा न होने पर भी, कुछ काम करना ही पड़ता है। तात्पर्य यह है कि मनुष्य जीवन काम करने लिए ही बनाया गया है, और धनवान तथा धनहीन कोई भी मनुष्य इससे बच नहीं सकता।

यद्यपि इस बात की सत्यता निर्विवाद सिद्ध है कि संसार के प्रत्येक मनुष्य को कुछ न कुछ व्यवसाय या कार्य करना ही पड़ेगा, तथापि बहुत से युवकों को इस बात में डर और घृणा होती है। वे अपने माता पिता का पिंड नहीं छोड़ना चाहते और रोटी के प्रश्न को स्वयं हल करने में वेइज्जती समझते हैं। परन्तु उन्हें भी कभी न कभी, जल्दी मनुष्य जीवन के असफल होने के दो मुख्य कारण हैं-पहला यह है कि वह कभी-कभी अपना स्वाभाविक कार्य शक्ति के विरुद्ध व्यवसाय में लग जाता है। दूसरा कारण यह है कि मनुष्य व्यवसाय कुशल हुए बिना ही अपने कार्यों को शुरू कर देता है। परन्तु जब तक कार्यकुशलता और काम-चलाऊ अनुभव न हो जाय, तब तक सहसा कोई काम शुरू नहीं करना चाहिए। यह सच है कि अनुभव और कुशलता जल्द नहीं आतीं परन्तु इन्हें दृष्टि के बाहर जाने नहीं देना चाहिए।

ऊपर कहा जा चुका है कि जीवनसंग्राम में मनुष्य अमुक दो कारणों से अकृतकार्य होता है। परन्तु हमारे भारतवर्ष में एक और भी तीसरा कारण देखा जाता है। इस देश के लिखे पढ़े शिक्षित लोग केवल मानसिक और मौखिक कार्य करना अधिक पसन्द करते हैं। उन लोगों में शारीरिक व्यवसायों से एक प्रकार की घृणा उत्पन्न हो गई है। ऐसे अनेक उदाहरण देखने को मिलते हैं कि एक मनुष्य आठ रुपये माहवार में म्युनिसिपल नाके का मुंशी बनकर कान में कलम दाब रखने में अपने जीवन की सार्थकता समझता है, परन्तु अन्य शारीरिक कार्य करके अधिक द्रव्य पैदा करने में उसे लज्जा मालूम होती है। भारतवर्ष में बाबू साहब की बीमारी दिनोंदिन बढ़ रही है और शोक के साथ कहना पड़ता है कि यदि किसी ने इस मर्ज की दवा शीघ्र ही न निकाली तो यह बीमारी असाध्य हो जायगी। स्मरण रहे कि शारीरिक श्रम करने से और अपनी कर्मेन्द्रियों को किसी उपयोगी कार्य में लगा देने से ही शिक्षित समाज अपने देश के लिए आदर्श हो सकता है। विद्यार्थियों को उचित है कि वे इस बात पर ध्यान दें और

शारीरिक श्रम से घृणा न करें।

ऊपर इस बात की आवश्यकता बतलाई जा चुकी है कि हर एक मनुष्य को अपनी स्वाभाविक प्रकृति और कार्यशक्ति के अनुकूल व्यवसाय चुनना चाहिए। अतएव जो मनुष्य संसार में सफलता प्राप्त करना चाहता है उसका पहला कर्तव्य इस बात का ज्ञान प्राप्त करना होगा कि उसकी रुचि किन कार्यों की ओर अधिक है। बहुत से मनुष्य इस बात की कोई आवश्यकता नहीं समझते कि कोई भी युवक अपनी प्रवृत्तियों को जानकर उसके अनुसार काम करे। उनका यह सिद्धान्त है कि हर एक मनुष्य कोई भी कार्य कर सकता है। अपनी प्रवृत्ति का ज्ञान प्राप्त करने की कोई आवश्यकता नहीं है। केवल परिश्रम करना पड़ेगा। लार्ड चेष्टरफील्ड का भी यही मत था। वे कहा करते थे कि अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तियों तथा कार्यशक्तियों को जानने की कोई आवश्यकता नहीं है। कोई भी युवक केवल परिश्रम से विद्वान्, सुवक्ता, राजनीतिज्ञ, यशस्वी खूबसूरत, समाजप्रिय इत्यादि सभी कुछ (परन्तु कवि नहीं) बन सकता है। बल्कि वे यहाँ तक कहते थे कि मेहनत न करने पर मनुष्य यदि अच्छा कवि न भी बन सके, तो खासा तुकबन्द अवश्य बन सकता है। उनके कथन का सारांश यही है कि कोई भी मनुष्य कवि, ग्रन्थकार, राजनीतिज्ञ अर्थात् कुछ भी बनाया जा सकता है। अपने इसी सिद्धान्त के अनुसार लार्ड चेस्टरफील्ड ने अपने लड़के स्टैनहाप को जो कि बड़ा सुस्त, कार्यशिथिल और असावधानतापूर्ण था, एक समयसूचक सत्पुरुष बनाना चाहा। उन्होंने इसके लिए वर्षों तक परिश्रम किया। परन्तु फल वही हुआ जो ऐसी अवस्थाओं में सदैव हुआ करता है। लड़का उम्र भर ज्यों का त्यों रहा। उसकी योग्यता न बढ़ी। इसलिए स्वाभाविक प्रवृत्तियों का जानना परम आवश्यक है, और इसके जानने में कोई कठिनाई भी नहीं है। प्रायः हर एक लड़के की बाल्यावस्था के कार्यों से यह जाना जा सकता है कि वह भविष्य में किस तरह का मनुष्य होगा। जो लड़का कालिदास बनने को पैदा हुआ है वह छोटी उम्र में भी अच्छी कविता कर सकता है। जो भविष्य में शिवाजी बनता है वह बचपन में लड़कों की ही सेना बनाकर सेनापति का कार्य भी किया करता है। और जो भविष्य में विख्यात अमीरअली ठग बनता है वही लड़का बचपन में पहले पहल "भुट्टे चुराकर" अपना पहला पाठ सीखता है। कहने का तात्पर्य यही है कि किसी की बाल्यावस्था के कार्यों और प्रवृत्तियों को देखकर यह सरलतापूर्वक जाना जा सकता है कि यह लड़का आगे चलकर किस प्रकार का मनुष्य होगा।

जब यह मालूम हो जाय कि अमुक लड़के की अच्छी प्रवृत्ति किस ओर है तब सबसे आवश्यक कार्य यह रह जाता है कि उसको उसी कार्य में अच्छी शिक्षा मिले। अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तियों के अनुकूल योग्य और उदार शिक्षा पाने पर मनुष्य अपने व्यवसाय में थोड़े ही परिश्रम से सर्वश्रेष्ठ है। हाँ, कभी-कभी यह भी देखा जाता है कि किसी मनुष्य के भविष्य जीवन का पूर्वप्रतिविम्ब उसकी बाल्यावस्था में नहीं दीखता। परन्तु ऐसे अपवादात्मक उदाहरण बहुत कम पाये जाते हैं।

जिस तरह इस सृष्टि की प्रत्येक वस्तु में एक-एक विशेष गुण रहता है उसी तरह प्रत्येक मनुष्य

में भी कुछ विशिष्ट कार्य करने की शक्ति अवश्य ही रहती है। यह शक्ति अथवा स्वाभाविक प्रवृत्ति चाहे किसी विशिष्ट अवस्था अथवा परिस्थिति में न भी मालूम हो सके, परन्तु वह ऐसी दृढ़ और उत्कट होती है कि वह आप ही आप प्रकट हो जाती है। उसे कोई छिपा नहीं सकता।

जब हम अपनी रुचि और प्रवृत्ति के अनुसार कोई व्यवसाय चुन लें तब फिर हमें उसमें हजारों बाधाओं के होने पर भी लगे रहना चाहिए। बहुधा युवावस्था में कुछ कष्ट, उदासीनता अथवा अकृतकार्यता होने से युवकगण हताश हो कर अपने इच्छित व्यवसाय को यह समझ कर छोड़ देते हैं कि कदाचित् वे किसी दूसरे व्यवसाय में लग जाने से अधिक सफलीभूत होंगे। परन्तु यह बड़ी भारी भूल है। हमें सर्वदा यही उचित है कि हम जिस धन्धे को अपने लिए एक बार चुन लें फिर उसे कभी न छोड़ें। उसी में दृढ़ता पूर्वक लगे रहें। जीवन-संग्राम में विजय-प्राप्ति करने के लिए अपनी प्रवृत्तियों के अनुकूल व्यवसाय चुनने की जितनी आवश्यकता है उससे बढ़कर उसमें दृढ़तापूर्वक लगे रहने की भी है। कठिनाइयों के उपस्थित होने पर यह विचार करना मूर्खता है कि हम किसी दूसरे व्यवसाय में अधिक सफल हुए होते। जब अपने व्यवसाय को छोड़कर दूसरे धंधों में लगने के लिए जी ललचाता है तब उस दूसरे धंधे के केवल गुण और लाभ ही दृष्टिगत हुआ करते हैं और अपने धंधे के केवल दोष और हानि। पर ऐसा होना संभव नहीं है। हम जिस गुलाब को देखेंगे उसी में कांटे मिल सकते हैं। इसलिए अपने एक बार के दृढ़ निश्चित व्यवसाय को बिना बिना समझे बूझे कभी नहीं छोड़ना चाहिए। नहीं तो लेने के देने पड़ जायँगे और यही हालत होगी कि "खुदा ही मिला न विसाले सनम। न इधर के हुए न उधर के हुए।" इसलिए हमें किसी व्यवसाय के चुनने अथवा छोड़ने में चंचलता और जल्दी नहीं करनी चाहिए। कभी-कभी जब मनुष्य अपने व्यवसाय में हजार प्रयत्न करने पर भी सफल नहीं होता तब उसे अपना व्यवसाय बदल कर दूसरा चुनने की आवश्यकता अवश्य होती है। परन्तु इससे यह भी सिद्ध होता है कि उसने अपने पूर्व व्यवसाय को चुनने में बड़ी गलती की। ऐसी गलतियाँ कई कारणों से बुरी संगति, अचानक घटना, माता पिता की बुद्धिहीनता अथवा अधूरी शिक्षा के कारण, बहुधा हुआ करती है। परन्तु युवावस्था में मन बहुत चंचल रहता है। किसी काम को खूब सोच समझकर करना चाहिए। प्रायः ऐसा भी देखा जाता है कि अनेक युवक उस कार्य को करते हैं जिनमें वे कभी सफल नहीं हो सकते और कुछ युवक भ्रमवश अपने उस व्यवसाय को छोड़ बैठते हैं जिनमें थोड़े ही अधिक परिश्रम से वे सफलीभूत हो गये होते। ध्यान रखने की बात है कि जो व्यवसाय किसी भी दृष्टि से जितना ही अधिक अच्छा होगा, उसमें सफलता प्राप्त करने के लिए उतना ही अधिक समय और परिश्रम भी लगेगा। हाँ, जिस राह से हम जा रहे हैं उस राह में यदि सिंह मिल जाय तो हमारा यह सोचना बिलकुल स्वाभाविक होगा कि उस रास्ते के सिवा संसार के अन्य किसी रास्ते में सिंह आ ही नहीं सकता, परन्तु बिना परिश्रम के कुछ भी नहीं मिल सकता। इसलिए बाधाओं का सामना करते हुए अपने एक बार के चुने हुए व्यवसाय में दृढ़तापूर्वक लगे रहना श्रेयस्कर है। इसी तत्व के आधार पर हमारे पूर्वजों ने वर्णाश्रम-धर्म की रचना की है, जिससे समाज के सब व्यवसाय

उचित रीति से हुआ करें। और इसी तत्व के अनुसार भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को उपदेश दिया है कि स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।

इस लेख को समाप्त करने के पहले विद्यार्थियों को यह बतला देना आवश्यक है कि तुम्हें इच्छा अथवा आवश्यकता के कारण जिस व्यवसाय को करना पड़े उसे तुम घृणा की दृष्टि से मत देखो। बहुत से युवक अपनी योग्यता की डींग हांकें बिना सन्तुष्ट नहीं होते। वे कहा करते हैं कि यदि हम उस व्यवसाय में न होते तो बहुत ही यशस्वी होते। उनका ईश्वर के सामने यही रोना रहता है कि उसने हमको अपनी अपूर्व योग्यता का प्रकाश करने का अवसर ही न दिया। अपने साथियों से सदैव अपनी योग्यता के विषय में व्याख्यान देकर ऐसे युवक कहा करते हैं, कि हमें अपनी योग्यता को बर्बाद करना पड़ रहा है, ग्रहदशा अच्छी नहीं है, साधन और संयोग प्रतिकूल हैं इत्यादि। परन्तु यह युवकों को बड़ी भारी भूल है। इस तरह के प्रलापों के कारण दुनिया उन्हें आत्मप्रशंसक समझ कर उनका तिरस्कार करेगी, क्योंकि दुनिया की तो आज तक यही समझ है कि जिसमें थोड़ी बहुत आश्चर्यजनक योग्यता विद्यमान है वह मनुष्य उसे किसी न किसी तरह से संसार को अवश्य ही दिखा देगा। इसीलिए अपने व्यवसाय की तुच्छता की शिकायत करते रहने के बदले उसे उच्च और कुलीन बनाने के प्रयत्न में मनोयोगपूर्वक लगे रहने से अधिक लाभ और ख्याति की सम्भावना है। उस व्यवसाय को तुम अपने किसी पाप का प्रायश्चित मत समझो, केवल कर्तव्य समझ कर ही उसके सम्पादन में दत्तचित्त हो जाओ। फिर सफलता दूर नहीं रहेगी। ❀❀❀

महापुरुषों की जयन्ती

खुदीराम बोस	3 दिसम्बर
डॉ0 राजेन्द्रप्रसाद	3 दिसम्बर
सी0 राज गोपालचारी	10 दिसम्बर
गुरू गोविन्दसिंह	22 दिसम्बर
मदनमोहन मालवीय	25 दिसम्बर
शहीद ऊधमसिंह	26 दिसम्बर
कन्हैयालाल मुंशी	31 दिसम्बर

1 दिसम्बर	एडस जागरूकता दिवस
4 दिसम्बर	नौ सेना दिवस
5 दिसम्बर	संविधान दिवस
7 दिसम्बर	झण्डा दिवस
10 दिसम्बर	ऊर्जा संरक्षण दिवस
10 दिसम्बर	मानव अधिकार दिवस
16 दिसम्बर	विजय दिवस (भारत–पाक युद्ध 1971)

महापुरुषों की पुण्यतिथि

संत ज्ञानेश्वर	5 दिसम्बर
अरविन्द घोष	5 दिसम्बर
बाबासाहेब अम्बेडकर	6 दिसम्बर
सरदार बल्लभभाई पटेल	15 दिसम्बर
पं0 रामप्रसाद बिस्मिल	19 दिसम्बर
अश्फाक उल्लाखान	20 दिसम्बर
शहीद रोशनसिंह	20 दिसम्बर
हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द	23 दिसम्बर
महाराजा छत्रसाल	25 दिसम्बर
सी0 राज गोपालचारी	25 दिसम्बर
विक्रम साराभाई	31 दिसम्बर

20 दिसम्बर	गोआ मुक्ति दिवस
24 दिसम्बर	राष्ट्रिय उपभोक्ता दिवस

स्वास्थ्य चर्चा

5. कड़वी तोरई का रस 2–3 बूंद नाक में चढ़ा लें। दवा अन्दर जाते ही पीले रंग का पानी निकलना आरम्भ हो जाता है। पानी निकलकर एक ही दिन में रोगी ठीक हो जाता है।

नोट– यह दवा बहुत तेज है। कोमल प्रकृतिवालों को सेवन नहीं करनी चाहिए। नाक में अधिक जलन प्रतीत हो तो बाद में गोघृत की नस्य लें।

यदि ताजा कड़त्री तोरई न मिले तो सूखी तोरई का टुकड़ा रात–भर पानी में भिगोकर, उस पानी का प्रयोग करें। इससे भी वही लाभ होगा।

6. पुनर्नवा बूटी की जड़ साफ करके छोटे–छोटे टुकड़े काट लें। फिर 20–21 टुकड़ों को धागे में बांधकर माला तैयार करें और रोगी के गले में पहना दें। कुछ दिन में रोग दूर हो जाएगा। स्वास्थ्य–लाभ होने पर माला को किसी वृक्ष पर डाल दें।

7. फिटकरी कच्ची 20 ग्राम बारीक पीसकर 21 पुड़िया बना लें। प्रतिदिन एक पुड़िया मक्खन के साथ खिलाया करें। पुराने–से पुराना पाण्डु रोग भी इस औषधि के सेवन से निर्मूल हो जाएगा।

8. बढ़िया श्वते फिटकरी भून लें और शीशी में भरकर सुरक्षित रखें। यदि पाण्डु रोग एक मास से अधिक का है तो पहले दिन 1 ग्राम, दूसरे दिन 2 ग्राम, तीसरे दिन 3 ग्राम, फिर प्रतिदिन 3 ग्राम दवा फंकाकर ऊपर से दही का एक प्याला पिला दिया करें। प्रभु–कृपा से 7 दिन में पुराने–से–पुराना पाण्डु रोग नष्ट हो जाएगा।

9. अरण्ड के पत्तों का रस 10 ग्राम से 20 ग्राम तक गाय के कच्चे दूध में मिलाकर प्रातः सायं दिन में दो बार दें। 3 से 7 दिन में पीलिया नष्ट हो जाता है।

नोट– यदि किसी को दस्त लग जाएँ तो चिन्ता न करें।

दही और चावल खाने को दें। जिसे दस्त साफ न होता हो उसे दूध अधिक दें। रोटी बिल्कुल न दें।

10. कुटकी का चूर्ण 3–3 ग्राम दिन में 3 बार जल के साथ सेवन करने से और साथ ही धनिया पिसा हुआ तथा गुड़, दोनों को समभाग लेकर उनके बीस–बीस ग्राम के मोदक (लड्डू) बनाकर प्रातः एवं सायं एक–एक खाने से भयंकर से भयंकर पीलिया 3–4 दिन में ठीक हो जाता है।

11. आक के पत्ते 25 नग और इनके बराबर मिश्री तोलकर डाल लें। दोनों को खरल में डालकर तीन दिन तक इतना घोंटें कि सुर्मे की भांति बारीक हो जाए। फिर चने के बराबर गोलियाँ बना लें। 2–2 गोली प्रात, दोपहर सायं पानी के साथ दें। पहले ही दिन लाभ प्रतीत होगा। तेल, मिर्च और खटाई न दें।

12. पांच ग्राम हरड़ (पीली, बड़ी हरड़) को करेले के पत्तों के रस में घिसकर पीने से पाण्डु रोग नष्ट होता है।

13. गिलोय की लता गले में लपेटने से पाण्डु व कामला रोग दूर होता है।

14. शहद और गिलोय का काढ़ा मिलाकर पीने से पाण्डु रोग दूर होता है।

पानी में डूबे मृतप्राय व्यक्ति पर

पानी में डूबकर मरे हुए व्यक्ति पर निम्न उपचार करें। यदि कोई लाभ न हो, तभी अन्त्येष्टि-संस्कार करें।

पहले भूमि पर लगभग 40 किलो नमक बिछा दो। उस पर उस व्यक्ति को लिटा दो। बाद में उसके ऊपर-नीचे चारों ओर नमक बिछा दें। 8-10 घण्टे में सारा पानी खिंचकर बाहर आ जाएगा।

नोट–सिर पर नमक न रखें।

पायोरिया–नाशक

1. नीम, जामुन, आम और अखरोट की छाल, प्रत्येक 50-50 ग्राम। अकरकरा और मोचरस 15-15 ग्राम। लाहौरी (सेंधा) नमक, फिटकरी का फूला, 25-25 ग्राम। नीला थोथा भुना हुआ 15 ग्राम। बादाम के छिलकों का कोयला 100 ग्राम, सबको कूट-पीसकर मंजन बना लें।

प्रातः-सायं दोनों समय मंजन करें। कुल्ला एक घण्टा बाद करें। 15 दिन के प्रयोग से ही पायोरिया ठीक हो जाताहै। दांत मोती की भांति चमकने लगते हैं। दांतों के समस्त रोग दूर होकर दांत मजबूत होते हैं।

2. नारंगी के छिलकों के कपड़छन चूर्ण का व्यवहार प्रतिदिन मंजन की भांति करें, कुछ ही दिनों के लगातार प्रयोग से पायोरिया समूल नष्ट हो जाता है।

3. मिट्टी के तेल के गरारे करने से पायोरिया दूर हो जाता है।

4. परमैंगनेट ऑफ पोटाश 1 ग्रेन एक गिलास पानी में डालकर दिन में दो-तीन बार कुल्ले करें।

5. फिटकरी भुनी हुई और सोना गेरू, 10-10 ग्राम, नीला थोथा भुना हुआ 5 ग्राम, तीनों को कूट-पीसकर शीशी में भर लें, मंजन तैयार है।

प्रातः सायं दांतों पर मलें। कुल्ला एक घण्टे पश्चात् करें। कुछ समय के निरन्तर प्रयोग से पायोरिया दूर हो जाता है।

दांतों से रक्त आना, पानी लगना आदि रोग दूर हो जाएँगें, हिलते हुए दांत मजबूत होंगे।

6. तम्बाकू के पत्तों का चूर्ण दांतों पर मलने से पायोरिया नष्ट हो जाता है। मसूढ़ों का फूलना और पानी लगना भी दूर हो जाता है।

7. कपूर को कैस्ट्रायल में घोलकर जब भी समय मिले दांतों पर मला करें। पायोरिया के लिए सरल एवं सस्ता उपाय है।

8. बादाम का छिलका जला हुआ 20 ग्राम, कपूर 2॥ ग्राम, कालीमिर्च 10 ग्राम, फिटकरी भस्म 5 ग्राम, अफीम 2॥ ग्राम, सेंधा नमक 60 ग्राम, अकरकरा और लौंग 2॥-2॥ ग्राम, सब वस्तुओं को कूट-पीसकर मंजन बना लें।

प्रातः सायं दोनों समय दांतों पर मलें। एक घण्टे तक कुल्ला न करें। एक सप्ताह के प्रयोग से एकदम चमत्कार प्रतीत होगा।

पित्ती

1. घी में थोड़ा-सा सेंधा नमक मिलाकर शरीर पर मलने से उठी हुई पित्ती या शीतपित्ती शान्त हो जाती है।

2. नीम के हरे पत्ते साफ करके तब तक चबाते रहें जब तक कड़वे न लगने लग जाएँ। यदि हरी निबौली मिल सके तो 6 नग निबौली चबानी चाहिएँ। पित्ती दूर करने में अत्यन्त प्रभावशाली है।

3. यदि पित्ती के दफेड़ों में जलन और खुजली बहुत अधिक हो तो अर्क गुलाब 30 ग्राम और सिरका बीस ग्राम दोनों को मिलाकर लगाने से तुरन्त आराम आ जाता है।

4. सर्पगन्धा बूटी की जड़ 1 ग्राम बारीक पीसकर पानी के साथ फांक लेने से पित्ती तुरन्त दब जाती है।

5. पोदीना 9 ग्राम और शक्कर (गुड़) 20 ग्राम, दोनों को 200 ग्राम पानी में उबाल एवं छानकर पिलाने से बार-बार उछलने वाली पित्ती शान्त हो जाती है।

6. नागकेसर बारीक पीसकर 3 ग्राम दवा 10 ग्राम शहद के साथ चटाएँ। दिन में 4-5 बार दें। पित्ती उछलना बन्द होगा।

पित्त-रोग

1. पीली हरड़ 25 ग्राम, मुनक्का 50 ग्राम, दोनों को सिल पर बारीक पीसकर उसमें 75 ग्राम बहेड़े का चूर्ण मिला लें। चने के बराबर गोलियां बनाकर प्रतिदिन प्रातःकाल ताजा जल से सेवन करें। इसके सेवन से समस्त पित्त रोगों का शमन होता है। हृदय रोग, रक्त के रोग, विषम ज्वर, पाण्डु, कामला, अरुचि, उबकाई, कुष्ठ, प्रमेह, अफारा गुल्म आदि अनेक व्याधियाँ नष्ट होती हैं।

2. दस ग्राम आंवला रात्रि में पानी में भिगो दें। प्रातःकाल आंवलों को मसलकर छान लें। इस पानी में थोड़ी मिश्री और जीरे का चूर्ण मिलाकर सेवन करें। तमाम पित्त-रोगों की रामबाण औषधि है। इसका प्रयोग 15-20 दिन करना चाहिए।

पीनस

1. मरबा की पत्तियों का ताजा रस नाक और कान में डालने से आरोग्यता आती है।

2. तारपीन का तेल और पिसा हुआ देशी कपूर 10-10 ग्रेन लेकर शीशी में भर लें और मजबूत कार्क लगाकर धूप में रख दें। एक घण्टे में दोनों मिलकर एक हो जाएँगे। इस लोशन को रोगी के नथुनों में 5-5 बूँद डालें और रोगी से सूँघने को कहें। 3-4 बार के प्रयोग से ही कीड़े नष्ट हो जाएँगे।

3. जुकाम बिगड़ने से नाम में कीड़े पड़ जाते हैं और नाक से बदबू आने लगती है। ऐसी स्थिति में, देशी कपूर 3 ग्राम और सेलखड़ी 6 ग्राम, दोनों को मिलाकर खरल में घोट लें। इसका नस्य दिन में 3-4 बार दें। पीनस मिटेगा और नाक के कीड़े भी निकल जाएँगे।

पीलिया

हींग को सुर्मे की भांति पीसकर प्रातः सायं दोनों आंखों में लगाओ, कुछ ही दिनों में पीलिया दूर हो जाएगा।

पुत्रोत्पादक

1. जो स्त्री गर्भिणी हो जाने पर पहले ही मास शिवलिंगी के 9 या 11बीजों का चूर्ण बछड़ेवाली गाय के दूध के साथ प्रातःकाल फांक लेती हैं उसके गर्भ से पुत्र उत्पन्न होगा, कन्या नहीं, और पुत्र साधारण नहीं अपितु शिव के समान पराक्रमी। गर्भ का ज्ञान होते ही यह प्रयोग फौरन कर लेना चाहिए।

2. भांग के 9 बीज गुड़ में रखकर गोली बना लें और जब तीसरा मास आरम्भ हो तब प्रातःस्नान आदि से निवृत्त होने पर यह गोली खिलाकर ऊपर से बछड़ेवाली गौ का धारोष्ण दूध पिला दें। निश्चय ही पुत्र उत्पन्न होगा।

पेचिश

1. राल 20 ग्राम लेकर बारीक कूट-पीसकर कपड़छन कर लें। इसकी तीन पुड़िया बना लें। प्रतिदिन एक पुड़िया सौ ग्राम दही में चीनी मिलाकर रोगी को सेवन कराएँ। तीन दिन में पेचिश भाग जाएगी।

2. काली हरड़ को तनिक-सा गो-घृत डालकर तवे पर भून लें। फिर बारीक पीसकर और इसके बराबर मिश्री मिलाकर सुरक्षित रखें। आवश्यकता पड़ने पर प्रातः 6 ग्राम की मात्रा पानी के साथ दिया करें। कुछ ही दिन में स्वास्थ्यलाभ हो जाएगा। खाने को चावल और दही दें।

3. काकड़ासींगी 10 ग्राम को कूट-पीसकर शीशी में भरकर रखें। 1 से 2 ग्राम तक की मात्रा 4-4 घण्टे के अन्तर से दही में मिलाकर दें। एक ही दिन में लाभ हो जाता है। पेचिश के लिए रामबाण है।

4. छोटी पीपल 10 ग्राम बारीक पीसकर सुरक्षित रखें। प्रातःसायं एक-एक ग्राम की मात्रा समोष्ण (थोड़े गर्म) दूध के साथ दें। कब्ज के कारण होनेवाली पेचिश के लिए अचूक एवं सफल प्रयोग है। दो मात्राओं में ही पूर्ण लाभ हो जाता है।

5. राल 25 ग्राम, मिश्री 50 ग्राम, दोनों को कूट-पीसकर कपड़छन कर लें। बस, औषधि तैयार है। दिन में 3-4 बार 1 ग्राम से 2 ग्राम तक की मात्रा 50 ग्राम दही के साथ दें। इसके सेवन से रक्त एवं शूल एक ही दिन में बन्द हो जाता है।

6. शीशम के हरे पत्ते 6 ग्राम, पोदीने के हरे पत्ते 12 ग्राम अथवा सूखे 6 ग्राम। दोनों को पानी में ठण्डाई की भांति घोट-छानकर प्रातःसायं पिलाएँ। कुछ ही दिन में रोग से पिण्ड छूट जाएगा।

7. केले की फली खांड लगाकर खाएँ और रोग से छुटकारा पाएँ। अद्भुत एवं अनुपम औषधि है।

8. छोटी हरड़ 20 ग्राम, सौंफ 20 ग्राम, दोनों को भूनकर पीस लें फिर इसमें 20 ग्राम मिश्री मिला लें। प्रातःसायं 6 ग्राम चूर्ण पानी के साथ सेवन करने से पेचिश शर्तिया बन्द हो जाती हैं।

-(शेष अगले अंक में)

रामपाल शैतान

रचयिताः पं० नन्दलाल निर्भय, बहीन, जिला-पलवल (हरि०)

ईश्वर न्यायकारी अजब, करता है वह न्याय।
उससे बच सकते नहीं, लाखों करें उपाय॥
लाखों करें उपाय, फेल सब हो जाते हैं।
ईश्वर जगदाधार, शास्त्र सब दर्शाते हैं॥
दयासिन्धु जगदीश जगत पालक करुणाकर।
बिन हाथों के काम, निराले करता ईश्वर॥

सारे जग में हो गया, रामपाल बदनाम।
करता था जो रात-दिन, वेद विरोधी काम॥
वेद विरोधी काम, नित्य बकता था गाली।
बनता था भगवान, स्वयं वह नीच कुचाली॥
दयानन्द ऋषिराज, दीन-दुखियों के प्यारे।
देव पुरुष को दोष, लगाता था वह सारे॥

ऋषिवर की आलोचना, सुन जागे बलवान।
कूद पड़े मैदान में, आर्य वीर महान॥
आर्य वीर महान, सन्त बलदेव निराले।
चले हजारों साथ, आर्य जन थे मतवाले॥
दुष्ट संभलकर बोल, लगाया नारा मिलकर।
पापी! तू कह नहीं, परोपकारी थे ऋषिवर॥

रामपाल ने जब सुनी, वीरों की ललकार।
कहा साथियो से इन्हें, फौरन दो तुम मार॥
फौरन दो तुम मार, एक दम चलीं गोलियां।
लगा रहीं थीं, वेद-धर्म, जयघोष टोलियां॥
"हंसकर हुए शहीद, भ्रात दो इकसुकारी।"
करके अत्याचार, खुशी था अत्याचारी॥

उसी करोंथा कांड में, रामपाल शैतान।
न्यायालय जाता न था, सुनो लगाकर ध्यान॥
सुनो लगाकर ध्यान, गया था शठ बरवाला।
लिया पुलिस न पकड़, जेल में पापी डाला॥
"नन्दलाल" कह, पाखण्डी का ज्ञान है थोथा।
पड़ा जेल में दुष्ट, करेगा याद 'करोंथा"॥

❋❋❋

पाते हैं ?

लेखकः स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, आर्यसमाज, नईसड़क, उज्जैन (म० प्र०)

1. मिट्टी से ईंटं बनती हैं, ईंटों से महल बन जाते हैं पर इनके बनाने वाले कब? इन महलों में रह पाते हैं?
2. घटनायें होती रहती हैं जो समाचार बन जाते हैं, पर इनके लाने वाले कब, इन खबरों में आ पाते हैं?
3. भोजन जो मेहमान खाते हैं तृप्त हो प्रशंसा करते हैं, पर इनके बनाने वाले कब, इज्जत से खा पाते हैं?
4. चुनाव जहां भी होते हैं, मतदाता मत भी देते हैं, पर क्या वे दाता मतदाता, उस जगह पर भी जा पाते हैं?
5. आपका स्वागत वंदन अभिनन्दन रोज सामने आता है, पर किसका किसने कब, ये बता भी पाते हैं?
6. ब्रह्मचारी से गृहस्थी बनते हैं अपना कर्तव्य निभाते हैं, पर माया मोह के चक्कर में कितने वानप्रस्थी बन पाते हैं?
7. सृष्टि जो चलती रहती है, दुनियां ये है कहा ये जाता है, पर स्वार्थमयी संगत में कितने परोपकारी बन पाते हैं?
8. वाहनों में यात्रा होती है गन्तव्य तक पहुंच भी जाते हैं, पर ले जाने वालों को कभी भी धन्यवाद कह पाते हैं?
9. प्रसंगों पर आगतों को जो भी धन्यवाद कहने वाले हैं, वे भी तो कभी भी, कहीं न कहीं, स्मृति में रह पाते हैं?

❁❁❁

आर्यसमाज देवनगर महेन्द्रगढ़ (हरियाणा) का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज देवनगर हरियाणा का वार्षिकोत्सव बड़ी धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। 10 और 11नवम्बर को प्रातः मध्यान्ह और सायंकाल प्रवचन हुए। आचार्य स्वदेशजी मथुरा, आचार्य सोमदेव जी, आचार्य विष्णुमित्र जी के प्रवचन हुए और अर्चनाप्रिय तथा श्री योगेशदत्त व श्री कल्याणजी वेदी के भजन हुए। हार्दिक प्रसन्नता की बात तब हुई जब स्थानीय दान दाताओं ने भूमि दे दी व आर्यसमाज मन्दिर के लिए प्रकोष्ठ बनाने का भी संकल्प लिया। आदरणीय वैद्य श्री महिपालजी के नेतृत्व में युवादल अति उत्तम कार्य कर रहा है।

आर्यसमाज लोहाना का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज लोहाना रिवाड़ी (हरियाणा) का वार्षिक उत्सव दिनांक 3 और 4 नवम्बर 2018 में उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। आचार्य स्वदेशजी मथुरा और आचार्य श्री सोमदेवजी के मार्मिक प्रवचन हुए। प्रातःकालीन यज्ञ का आयोजन दो दिन रहा। श्री राजसिंह यादव यजमान रहे। श्री लाखनसिंह जी माल, मथुरा व ब्र0 राष्ट्रवसु के संगीत से लोगों में भक्तिरस का प्रवाह बहा। जिसकी लोगों ने बड़ी प्रशंसा की। श्री राजेन्द्रसिंह जी ने संचालन किया।

अन्तिम वैदिक साम्राज्य विक्रमी संवत 1270 में डुबो दिया

लेखकः स्वामी देवानन्द, आर्यसमाज पथ्रोट, जिला-अमरावती (महा०)

भारतवर्ष में जब तक वैश्विक साम्राज्य की महासत्ता थी तब तक वेदों की शिक्षा रही। यज्ञ कर्म होते रहे थे जब आर्यों की महासत्ता समाप्त हुई वैसा वैदिक धर्म लुप्त हुआ था।

सातवें मन्वन्तर के अठ्ठाईसवें महायुग के चौथे कलियुग के इकतालीसवें वर्ष में वैश्विक साम्राज्य का विघटन विभाजन हुआ तब सप्त खंडों में सात साम्राज्य खड़े हुए तब एशिया को रविखंड कहा जाता रहा था। राजधानी इन्द्रप्रस्थ ही रही थी। सम्राट महात्मा परिक्षित से क्षेमकर्ण तक कुरुवंशियों ने इन्द्रप्रस्थ से 1734 वर्ष 11 मास 10 दिन 29 पीढ़ियों ने साम्राज्य किया। कलि संवत् 1772 में कुरुवंशियों का साम्राज्य समाप्त हुआ था।

इन्द्रप्रस्थ का अन्तिम कुरु सम्राट क्षेमकर्ण का महाबल देश का सामंत सुमंत नयनहरि प्रभुदेव जी सुशर्मा ने परशुराम भूमि कोंकण में याज्ञवल्क्य साम्राज्य की स्थापना की थी। कन्याकुमारी से कच्छ तक पश्चिम सिंधु सागर किनारों में सहयाद्री की पश्चिमोत्तर अंतर्वेदी में था। राजधानी कोटद्वार थी। प्रजा राजा याज्ञिक थे, वेद दर्शनों की शिक्षा दी जाती थी।

सम्राट महाप्रतापी योद्धा चतुर्वेदी, दार्शनिक था। प्रजाजन भी विद्वान धार्मिक थे। कलियुग संवत् 1772 से 4315 तक 48 महापुरुषों ने 2543 वर्ष साम्राज्य किया था। अन्तिम कोटद्वार (कुडाल) देश का राजा महादेव सामंत थे। वे विक्रम संवत् 1270 में भूतरगढ़ युद्ध में शहीद हुए थे। अल्लाउद्दीन खिजली ने गद्दारों के मिली भगत से विजय प्राप्त की ईसा 1213 गद्दारों ने सम्राज्ञी तथा युवराज को भगा दिया। वे भूमिगत होकर पप्हाड़ प्रान्त के पिथलगांव राज में छुप गये।

कुडाल देश का युवराज नारायण देव का छठवें पीढ़ी का पूर्व अनन्तदेव खादरों में पारोला के कुलकर्णी बने। इनका पुत्र प्रभुदेव (केशव) वीरदेश महल के देशपांडे (कानूनगो) बने। इनका पुत्र छत्रपति शिवाजी के पन्हाला गडदुर्ग के किलेदार तथा सरदार थे। इनके पुत्र छत्रपति संभाजी के किलेदार सदाशिवराव रणशूर थे। इनके सुपुत्र माधवराव स्वामी माधवेंद्र स्वामी बने वे राष्ट्रसंत रामदास स्वामीजी के संन्यासी सेनादल के सेनापति थे। तथा इनके अनुज भ्राता विनायकरावजी छत्रपति स्वायंभुव (शाह) महाराज के दीवान थे तथा इनके साढू मराठी साम्राज्य के महाआमात्य पेशवा श्रीमंत बल्कालभट्ट थे। इन दोनों के पौत्र भी साढू थे राव छत्रपति के दीवानराव साम्राज्य के महाआमात्य थे। उनका नाम रहा दीवान पाण्डुरंग भट्ट पारोलकर राव पेशवा श्रीमंत बाजीराव द्वितीय थे।

पेशवा बाजीराव जी के मौसेरे भ्राता स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती की सहोदर बहन रोहिणीदेवी का सौतेला पुत्र रहे। सेनापति तात्याटोपे का मौसेरी बहन रही झांसी की रानी लक्ष्मीबाई थी स्वामी पूर्णानन्द जी के संन्यासी आश्रम के शिष्य रहे स्वामी दयानन्द सरस्वती।

दीवान पाण्डुरंग हरिपंत किलेदार, सूबेदार सरदार भी थे। इनके तीन रानियां थीं ज्येष्ठ रोहिणी के पुत्र रामहरी, राव लक्ष्मणहरि, गोपाल युद्ध में 1818 में शहीद हुए थे। दीवान की दूसरी रानी रुकमणि देवी का पुत्र रामचन्द्र तथा गंगाधर थे। रामचन्द्र का जन्म उनके मामाश्री विनायकराव ठोसर येवलेगांव में वैशाख शुक्ल पंचमी मृगनक्षत्र भावनाम संवत्सर शके 1736 शनिवार दि0 24।4।1914 को सूर्योदय में गाय के गोटे में हुआ था।

श्री रामचन्द्र पंत सामंत जी की शिक्षा दीक्षा ब्रह्मावर्त गुरुकुल में पिता पाण्डुरंगतथा मौसा पेशवा बाजीराव जी के द्वारा हुई थी। अपने से बड़ा बड़ों से बड़ा शत्रु दल की कमर तोड़ने में माहिर रामचन्द्र को पेशवा बाजीराव जी ने सेनापति के वस्त्र देकर ब्रह्मवर्त का सेनापति बनाया था। स्वयं बनाई हुई नवरत्न जड़ित टोप, फौलादी अंगरक्षक, दो खडग ढाल, सोने का कंगन, मोतियों की माला भेंट देकर तात्या टोपे नामों से अलंकृत कराकर गौरवान्वित किया था।

तात्याटोपे ब्रह्मावर्त के सेनापति तथा झांसी एवं ग्वालियर के सेना अध्यक्ष थे। रानी गोपिकाबाई पेशवा जी का कारोबारी गणेश रामचन्द्र श्रीगोरे का पौत्र नरहरी की पत्नी सावित्री की पुत्री जानकी से रामचन्द्र तात्याटोपे जी का विवाह हुआ था। सावित्री के पिता अनन्तराव फड़केजी का पौत्र वासुदेव फड़के थे।

तात्याटोपे जी के पिता के मौसेरा भाई के फुफेरा भाई सेनापति नरहरी गोखले थे। पेशवा बल्लास के मामा महादेव भानु का पौत्र नानासाहब फडणवीस थे। सरदार काशीनाथ प्रभु केलुसकर की पुत्री अहिल्या से तात्या का पुत्र सखाराम सामन्त का विवाह हुआ था तथा सरदार गीते जनवाडकर की पुत्री तथा अनन्तपुर के सरदार केशवराव कवि जी की पुत्री मथुरा तात्या की पौत्रवधु थी। सरदारगीते की पुत्री तुलसी तात्या की प्रपौत्र वधु थी।

दीवान पाण्डुरंग की तीसरी पत्नी मथुराजी के पुरखे मराठा साम्राज्य का आमात्य चिमणराव मोघे थे। रानी मयुरा के पुत्र विनायकराव, सदाशिवराव, रघुनाथ, वैद्यनाथ, रामकृष्ण एवं लक्ष्मण तथा पुत्री दुर्गा तात्या का प्रपौत्र नारायण का पुत्र भगवान की पत्नी शकुन्तला देवी की माता सीता पिता राम सामंत, शकुन्तला के पुत्र पुरुषोत्तम विठ्ठल, रामकृष्ण, नारायण, मुकुन्द तथा स्वामी सांख्यायन। रामकृष्ण की पत्नी का नाम वसुन्धरा का पुत्र विष्णुवर्धन सामन्त की पत्नी वैभवी का पिता विजय जोशी तथा वैभवी का पुत्र स्वयंभू सामंत। तात्या का सौतेला भ्राता लक्ष्मण के पुत्र रघुनाथ, रामचन्द्र, नारायण शंकर की पत्नी उमा का पुत्र मधुकर, वसन्त भालचन्द्र दत्तात्रय, नारायण का पुत्र विनायक का पुत्र असुतोष, भालचन्द्र की पत्नी विजया का पुत्र सुभाष एवं सुनिल, तात्या टोपे जी का चचेराभाई

त्रयंबक का पुत्र सदाशिव का पुत्र कृष्णराव का पुत्र प्रभाकर का पुत्र राजेश टोपे तथा पराग टोपे, तात्या टोपे जी का सगा भाई गंगाधर की पत्नी सावित्री का पुत्र नारायण का पुत्र माधव का पुत्र नरहरी, पेशवा चिमणराव का पुत्र विठ्ठल का पुत्र बालकृष्ण का पुत्र विनायक का पुत्र माधवराव चोटी। सेनापति नरहरी गोखले का पुत्र जनार्दन का पुत्र गणेश आगाशे।

सरदार नीलकंठ फड़के जी का पुत्र अनंतराव का पुत्र बलवंत का पुत्र वासुदेव का पुत्र गोविन्द भास्कर भानु का पुत्र महादेव का पुत्र रामचन्द्र का पुत्र नाना फडणवीस (केशव) का भाई रघुनाथ का पुत्र सखाराम के वंशज देवेन्द्र फडणवीस महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री हैं।

रघुनाथ नेवालकर का पुत्र कृष्णपंत वासुदेव तथा शिवराम भाऊ का पुत्र गंगाधरराव की पत्नी रानी लक्ष्मीबाई का पुत्र दामोदर का पुत्र सुधाकर का पुत्र प्रभाकर का पुत्र चन्द्रकांत का पुत्र अतुल झांसीवाला। तात्या के सौतेले मामा अमृतराव उर्फ विद्याज्योतितीर्थ स्वामी पूर्णानन्द जी महाराज के शिष्य दयानन्द स्वामी जी के शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द के शिष्य स्वतंत्रतानन्द के शिष्य स्वामी तात्याटोपे जी के 2151 शिष्य रहे थे उनमें रानी लक्ष्मीबाई, मंगलपांडे, वासुदेव फडके, राव गोपालदेव, राजा मानसिंह, सूबेदार हीरामणसिंह तथा तात्या के हमशक्ल रहे बादलसिंह कुशवाह, सुजानसिंह परिहार राव, नाराण भागवत, रामचन्द्र सूबेदार, रामचन्द्र कुलकर्णी, गोविन्दराव देशपांडे, रघुनाथ देशमुख।

स्वामी दयानन्द जी ने तात्या टोपे जी को वानप्रस्थ दिया। नाम रामानन्द मुनि रखा था। स्वामी नरसिंह परमहंस जी से तात्याटोपे जी ने (महात्मा रामानंद) संन्यास आश्रम की दीक्षा लेकर स्वामी गोविन्द परमहंस नाम धारण करके धुलिया के पास सोनगिरी दुर्ग में रह रहे थे। अपना नाम परिखठ्ठशहा बताते थे।

सेनापति तात्या टोपे जी का स्वामी गोविन्द परमहंस जी के रूप में रौद्र नाम संवत्सर शके 1842 में महानिर्वाण हुआ। तब उनको भण्डाग्नी दिया उनके शिष्योतम केशवचन्द्र शास्त्री आठवलेजी ने वे बालब्रह्मचारी थे। तात्या के उत्तराधिकारी सेनापति वासुदेव फडके, दामोदर चापेकर, विनायक सावरकर, चन्द्रशेखर तिवारी, सुभाषचन्द्र बोस, नत्थूराम गोडसे।

❁❁❁

आवश्यकता

तपोभूमि मासिक पत्रिका के पाठकों से निवेदन है कि हमें कुछ पुस्तकों की एक प्रति चाहिए जो हमारे प्रकाशन में उपलब्ध नहीं हैं। पुनः प्रकाशित होने पर आपको मयखर्च वापिस दे दी जावेंगी। वे निम्न हैं–

शुद्ध गीता, शुद्ध इतिहास, शुद्ध मनुस्मृति, उपनिषद प्रकाश (ईश, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डुक्य, मुण्डको), पर्व चन्द्रिका भाग–2, सुमंगली, स्वास्थ्य और योगासन, पारिवारिक कहानी संग्रह, चित्रमय दयानन्द, महिला गीतांजलि, सत्यार्थ मणिमाला, मार्कण्डेय पुराण समीक्षा, बोध कथायें भाग–1व 2, धर्मोपदेश भाग–1 व 2, स्वराज्य की नींव, वीर पुत्रियां, आर्यसमाज और मानव धर्म, पोपलीला, यज्ञ और यज्ञोपवीत, आदर्श मातायें, दयानन्द दिग्विजय, दयानन्द वचनामृत, मुक्ति सोपान भाग–1व 2, नमस्ते ही क्यों?, भागवत के नमकीन चुटकुले, बालक जो महान बने।

देश मानसिक दिवालियेपन की ओर

लेखकः आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक, भागलभीम, (जालौर)राज०

इस समय देश के सर्वोच्च न्यायालय में इस बात पर बहस चल रही है कि समलैंगिक सम्बन्धों को अपराध की श्रेणी में माना जाए अथवा इस श्रेणी से बाहर निकाल कर ऐसे दुराचारी लोगों को स्वच्छन्दता प्रदान की जाए? जब मैं प्राचीन काल में विश्वगुरु एवं चक्रवर्ती राष्ट्र रहे, अपने इस राष्ट्र के अतीत को स्मरण करता हूँ, तो प्रतीत होता है कि आज अपना वह आर्यावर्त (भारत) मर चुका है।

इस अपने भारत के विषय में जानने हेतु मैं एक ही उदाहरण प्रस्तुत करना पर्याप्त समझता हूँ–

अयोध्यानरेश महाराजा दशरथ के राज्य में नागरिकों के विषय में महर्षि वाल्मीकि ने लिखा है–

"नाल्पसंनिचयः
कामी वा न कदर्यो वा नृशंसः पुरुषः क्वचित्।
द्रष्टुं शक्यमयोध्यायां नाविद्वान् न च नास्तिकः।।"
सर्वे नराश्च नार्यश्च धर्मशीलाः सुसंयताः।
मुदिताः शीलवृत्ताभ्यां महर्षय इवामलाः।।
नानाहिताग्निर्नायज्वा न क्षुद्रो वा न तस्करः।
कश्चिदासीदयोध्यायां न चावृत्तो न संकरः।।

–(वा0 रामा0 बाल कां0 6। 8,9)

अर्थात् अयोध्या राज्य में सभी नागरिक अति समृद्ध थे। कोई महिला वा पुरुष न तो कामी था, न कंजूस, न क्रूर था। कोई ऐसा नागरिक नहीं था, जो सभी प्रकार के ज्ञान विज्ञान में पारंगत न हो, कोई नास्तिक नहीं था। सभी नर–नारी धर्मपरायण, जितेन्द्रिय, प्रसन्न, शील व सदाचार की दृष्टि से ऋषियों के समान पवित्र थे। सभी नित्य यज्ञ, ईश्वरोपासना व परोपकार करने वाले, अतिथियों व मूक प्राणियों का पोषण करने वाले थे। कोई भी संकुचित दृष्टिवाला, चोर तथा सदाचारशून्य व वर्णसंकर अर्थात् अपने वर्ण के अनुकूल योग्यता व आचरण से भ्रष्ट नहीं था।

इन्हीं के पुत्र मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम का राज्य तो विश्वविख्यात है। उनके राज्य में ये सभी गुण तो सभी नागरिकों में थे ही, इसके अतिरिक्त कुछ अन्य विशेषताएं भी महर्षि वाल्मीकि ने दर्शायी हैं। वे संक्षेप में इस प्रकार है–

"न पर्यदेवन् विधवा न च व्यालकृतं भयम्।
न व्याधिजं भयं चासीद् रामे राज्यं प्रशासति।। 98।।

न च स्म वृद्धा बालानां प्रेतकार्याणिकुर्वते।। 99।।
नित्यमूला नित्यफलस्तरवस्तत्र पुष्पिता:।
कामवर्षी च पर्जन्य: सुखस्पर्शश्च मारुत:"।। 102।।

अर्थात् श्रीराम के राज्य में कोई स्त्री विधवा नहीं होती थी, न विषैले जन्तुओं का भय था, न रोग का भय किसी को होता था। अल्पायु में किसी की मृत्यु नहीं होती थी, वृक्ष दीर्घायु तक फल व फूलों से युक्त रहते, इच्छानुसार वर्षा होती थी तथा वायु सुखद ही होकर बहती थी अर्थात् कहीं कोई प्राकृतिक प्रकोप भी नहीं होता था।

इस राष्ट्र एवं विश्व के नदीतटों, पर्वत शिखरों व गुफाओं में महान् तपोधन महर्षि लोग तप-साधना करते थे, प्रत्येक परिवार में वेदध्वनि गूंजती व यज्ञों की सुगन्ध सबको आनन्दित करती। सभी कर्मानुसार निर्धारित सभी वर्ण परस्पर सदाचार व प्रेमपूर्वक रहते थे। राष्ट्र विश्व में सर्वाधिक शक्तिशाली परन्तु सभी राष्ट्रों का संरक्षक, विश्वगुरु, सर्वाधिक समृद्ध एवं सदाचार में शीर्ष था। महाभारत काल में काफी पतन होते हुए भी वर्तमान की अपेक्षा सैकड़ों गुना श्रेष्ठ, समृद्ध, बलवान् व ज्ञान-विज्ञान से सम्पन्न था।

इस राष्ट्र एवं इस भरतखण्ड में भगवत्पाद महर्षिगणों व देवों में ब्रह्मा, महादेव, विष्णु, इन्द्र, नारद, बृहस्पति, सनत्कुमार, मनु, भृगु, वशिष्ठ, विश्वामित्र, वाल्मीकि, अगस्त्य, भरद्वाज, परशुराम, याज्ञवल्क्य, ऐतरेय महीदास, मार्कण्डेय, वेदव्यास, कपिल, कणाद, पंतजलि, यास्क, जैमिनि, गौतम, पाणिनि, दयानन्द जैसे अनेक महामानवों ने जन्म लिया, वहीं मरीचि, इक्ष्वाकु मान्धाता, पृथु, हरिश्चन्द्र, राम, लक्ष्मण, कृष्ण, हनुमान, दुष्यन्त पुत्र भरत, अर्जुन, चन्द्रगुप्त, चाणक्य, समुद्रगुप्त, शिवा, प्रताप, आदि अनेकों राजपुरुषों अथवा राष्ट्र निर्माताओं ने जन्म लिया। इस देश में भगवती उमा, उर्मिला, सावित्री, अनसूया, लोपामुद्रा, गार्गी, अपाला, घोषा, रुक्मिणी, जीजाबाई, पद्मिनी, दुर्गावती, पन्नाधाय, लक्ष्मी बाई जैसी पूज्या नारियों ने जन्म लिया। इन सबके चरित्र कितने पवित्र और उच्च थे, इसकी कल्पना भी आज का घमंडी एवं पाश्चात्य का बौद्धिक दास नहीं कर सकता है। इनके ज्ञान-विज्ञान का स्तर भी आज कल्पना की सीमा से बाहर है।

मेरे देशवासियो! सौभाग्य से हम ऐसे महान् देश में जन्मे परन्तु आज वही देश सर्वत्र दुराचार, लम्पटता, भ्रष्टाचार, आगजनी, चोरी, रिश्वतखोरी, मिथ्यापन, छल-कपट, ईर्ष्या, वैर, द्वेष, क्रूरता, हिंसा, निर्धनता, अज्ञान, अन्याय, प्राकृतिक प्रकोप, नशावृत्ति, वैश्यावृत्ति आदि अनेक अकथनीय पापों के सागर में डूबा है। कभी यहाँ के सन्त पूर्ण जितेन्द्रिय व अपरिग्रही अर्थात् धन संग्रह की वृत्ति से सर्वथा दूर रहने वाले महाविद्वान् होते थे, वहीं आज के सन्त महिलाओं के साथ रंगरेलियां मनाते, उन्हें शिष्याएं बनाते व खरबोंपति बन रहे हैं। दुराचार में लिप्त हो रहे हैं, कई जेलों में बन्द हैं, तब नेताओं, कथित प्रबुद्धों व सामाजिक कार्यकर्त्ताओं वास्तव में स्वाभिमान व राष्ट्रप्रेम की दृष्टि से दीन-दरिद्र व बौद्धिक

दृष्टि से विदेशों के दासों, कथित मानवाधिकारियों व कामलिप्सा में प्रतिक्षण डूबी युवापीढ़ी को क्या कहें? **जब अनेक साधु, ब्रह्मचारी, संन्यासी भी भ्रष्ट हो रहे हैं, तब कुछ लोगों को समलैंगिकता की निर्लज्ज मांग करने पर किसे आश्चर्य होगा? वस्तुतः मेरा भारत तो मर चुका है अब मैकाले का इण्डिया उस मरे हुए भारत के शव पर खड़े होकर निर्मम अट्टाहास कर रहा है। सच्चे भारतीय कम ही बचे होंगे, यदि सच्चे भारतीय अधिक संख्या में यहाँ होते, तो समलैंगिकता के पाप को वैधानिक मान्यता दिलाने की मांग के विरुद्ध देश में आन्दोलन कर रहे होते।** परन्तु मैं देख रहा हूँ कि सभी शान्त हैं। अनेक लोग मन से इसके पक्ष में होंगे और बाहर से दिखाने के लिए इस पाप का विरोध करेंगे। कुछ सज्जन हैं, तो वे निष्क्रिय व निराश होकर अपने घर बैठे हैं। सम्भवत: यह बात केन्द्र सरकार भी जानती है, इस कारण उसने भी धृतराष्ट्र बनने में ही अपनी शान समझ ली अथवा स्वयं को विवश मान कर सब कुछ न्यायालय पर छोड़ दिया।

आज मीडिया में अनेक व्यक्ति इस कुकर्म के पक्षधर नाना प्रकार के मिथ्या तर्क प्रस्तुत कर रहे हैं, **वे ऐसे महानुभाव इस इण्डिया में बड़े व्यक्ति माने जाते हैं, जबकि यदि भारत जीवित होता, तो इनकी दशा क्या होती, यह कहना आवश्यक नहीं।** मैं ऐसे दीनहीन बौद्धिक दासों के सभी मिथ्या तर्कों की परीक्षा करता हूँ–

1. यौन सम्बन्धों की स्वतंत्रता मानवाधिकार है।

समीक्षा– मैं सर्वप्रथम तो यह पूछता हूँ कि मानवाधिकार किसे कहते हैं? अपराधी का मुख ढक कर रखो, जिससे उसको समाज में निन्दा का पात्र न बनना पड़े। अपराधी को सार्वजनिक कड़ा दण्ड न दो। इसका अर्थ अपराधी का अधिकार है कि वह अपराध करते हुए भी निन्दा व अपमान का पात्र न बने। यह मानवाधिकार सभी अपराधियों यहाँ तक कि आतंकवादियों को ही मानव समझता है, जिनके मान–सम्मान के लिए सदैव यह चिन्तित रहता है। शायद अपराधियों के अपराध से ग्रस्त सज्जनों को कोई मानव समझता ही नहीं है।

2. समलैंगिकों को समाज में अपमान सहना पड़ता है।

समीक्षा– अपमान तो चोर, डाकू, बलात्कारियों, जुआरियों, हत्यारों को भी सहना पड़ता है और यदि ऐसा नहीं है, तो ऐसे समाज को जीवित रहने का कोई अधिकार नहीं है, जहाँ चोर, लुटेरों, बलात्कारियों को सम्मान मिलता हो। वैसे सच्चाई यह है कि आज राष्ट्र में ऐसे ही भ्रष्ट व दुराचारी लोग ही अपने धनबल, बाहुबल, जलबल व राजनैतिक बल के आधार पर प्रतिष्ठा पाते हैं। इस कारण इनके अधिकारों की मानवाधिकारवादियों को उतनी चिन्ता नहीं है, जितनी कि समलैंगिकों की। जिस दिन इन लोगों के साथ समाज में भेदभाव हो जायेगा, उस दिन न्यायालय में चोरी, बलात्कार, डकैती, जुआ व हत्या को भी अपराधमुक्त करने की मांग अवश्य उठेगी।

3. समलैंगिकता पारस्परिक सहमति पर आधारित हो, तभी वह अपराध की श्रेणी में नहीं आयेगी, जैसे

कि वर्तमान में 'लिव इन रिलेशन' कोई अपराध नहीं है, जबकि बिना इच्छा के दोनों ही अपराध हैं।

समीक्षा– दुर्भाग्य से 'लिव इन रिलेशन' का पाप पाश्चात्य कुसभ्यता दासों की मानसिकता का परिणाम है। यह दासता आज इण्डिया के कथित बुद्धिजीवियों की पहचान बन गयी है। भारत में ऐसे पापों के लिए कोई स्थान नहीं था, बल्कि ऐसे सम्बन्ध बनाने वाले स्त्री–पुरुषों दोनों के लिए सार्वजनिक मृत्युदण्ड का विधान था। जब सर्वोच्च न्यायालय में इस पर बहस चल रही थी, उस समय कोर्ट ने श्रीकृष्ण–राधा का उदाहरण देकर इसे वैध घोषित किया था। उस समय 'राधारमण हर गोविन्द जय' पर झूमने वाले रसिक कथावाचकों की बोलती बन्द थी। वे अपनी पत्नी, पुत्र वा माता को ऐसे सम्बन्धों की अनुमति नहीं दे सकते और न देनी चाहिए परन्तु राधा नाम आते ही उनकी बुद्धि नष्ट हो जाती है। तो कोई 'समरथ को नहिं दोष' कहकर पल्ला झाड़ देता है। परन्तु कोई भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण के निम्नलिखित कथन पर विचार नहीं करता–

'यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तद् तनदेवेतरोजनः
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकास्तदनुवर्तते'।।

अर्थात् समाज श्रेष्ठ लोगों के आचरण का अनुसरण करता है। मैं राधा–कृष्ण का समबन्ध बताने वालों से स्पष्ट कहना चाहता हूँ कि प्रचलित पुराणों की पापकथाओं के कारण ही आज कोर्ट ऐसे पापों को मान्यता दे रहा है। 'लिव इन रिलेशन' ब्रह्मवैवर्त पुराण के पाप का परिणाम है।

जहाँ तक पारस्परिक सहमति का प्रश्न है, तब दो व्यक्ति व स्त्री–पुरुष पारस्परिक सहमत होकर नगर के चौराहों पर यौन क्रीड़ा करने की अनुमति मांगें, तो क्या स्वतंत्रता के पक्षधर उनकी मांग को वैध बताएंगे? क्या एक दुःखी व्यक्ति दूसरे से अपनी हत्या कराने का आग्रह करे, तो क्या उसे ऐसा करने की अनुमति वैध होगी? यदि नहीं, तो क्यों? ये भी दोनों सहमत हैं। जुआ सभी परस्पर सहमत होकर ही खेलते हैं, तब उन्हें उसकी स्वतंत्रता क्यों नहीं? रिश्वत का लेन–देन भी परस्पर सहमति से होता है, तब वह अपराध क्यों? अनेक प्रकार के नशे अपराध की श्रेणी में क्यों हैं? उन्हें नशा करके आनन्द मनाने की छूट क्यों नहीं? नशीले पदार्थों की तस्करी बेचने व खरीदने दोनों की पारस्परिक सहमति से होती है, तब यह अपराध क्यों?

4. कुछ महाशय समलैंगिकता को शिखण्डी से जोड़ रहे हैं।

समीक्षा– मैं नहीं समझता कि इन कथित प्रबुद्धों ने महाभारत ग्रन्थ को ध्यान से पढ़ा भी होगा? शिखण्डी एक महारथी योद्धा था। उसके विषय में भीष्म पितामह ने केवल इतना कहा है कि वह पूर्व में स्त्री था, इससे संकेत मिलता है कि वह या तो पूर्व जन्म में स्त्री था अथवा उसने लिंग परिवर्तन कराया था। इन दोनों ही बातों से उसका समलैंगिकता से क्या सम्बन्ध? ऐसे कुतर्की लोगों की मानसिकता को धिक्कार है। सम्पूर्ण महाभारत में ऐसा कहीं संकेत नहीं है। हां, भागवत, ब्रह्मवैवर्त पुराणादि में अनेक पापों की कथा अवश्य है। दुर्भाग्य से **हिन्दू समाज इन ग्रन्थों को ही सीने से चिपकाये हैं। वेद उपनिषद्**

दर्शन, ब्राह्मण ग्रन्थों, शुद्ध मनुस्मृति, शुद्ध महाभारत, शुद्ध रामायण, सत्यार्थ प्रकाश व ऋग्वेदादि–भाष्य–भूमिका जैसे ग्रन्थों से उसे कोई लगाव नहीं है। मेरा सभी हिन्दू धर्माचार्यों से विनम्र अनुरोध है कि वे इन प्रचलित पुराणों, जिनमें से कोई भी महर्षि वेदव्यास जी की रचना नहीं है, का बहिष्कार करके विशुद्ध वेदमत को ही अपनाएं। अपने दुराग्रह छोड़ने का समय आ गया है। मैं समस्त हिन्दू समाज को सचेत कर रहा हूँ कि इन ग्रन्थों का सन्दर्भ देकर भविष्य में अनेक पापों को वैधता प्रदान करने का प्रयास किया जायेगा। जैसे–चोरी, जुआ, पुत्री के साथ पिता का यौन सम्बन्ध, पशु का मनुष्य से यौन सम्बन्ध, गौहत्या व गोमांसभक्षण, नरबलि आदि। तब आप क्या ऐसे ही मौन बने रहेंगें, जैसे आज बैठे हैं और 'लिव इन रिलेशन' का कानून भारतीय संस्कृति व सभ्यता को छलनी कर रहा है और सभी हिन्दू धर्माचार्य, हिन्दूराष्ट्र के उद्घोषक मौन हैं। अरे! कुछ तो बोलो! क्या यही हिन्दू राष्ट्र का विधान होगा?

5. समलैंगिकता एक प्राचीन परम्परा है, इस कारण इसे अपराध नहीं मानना चाहिये।

समीक्षा– यह पुरानी परम्परा कदापि नहीं है। सम्भव है मध्य काल में विदेशियों के सम्पर्क में आने, उनके शासन में रहने पर ये पाप इस देश के कुछ मूर्ख लोगों ने भी सीख लिए हों पुरानी परम्परा तो है, ब्रह्मचर्य व संयम की परम्परा, जो कोई अपना सके, तो अपना ले अन्यथा विदेशियों की दासता के नर्क ही स्वर्ग मानता रहे। फिर भी इसे सैकड़ों वर्ष पुरानी कहें, तो कहूंगा कि चोरी करना भी बहुत पुरानी परम्परा है। त्रेता में रावण जैसा योद्धा व विद्वान् भी चोरी से सीताजी का हरण कर ले गया, तब क्या इसे भी मान्यता दे दी जाए?

6. समलैंगिकता अप्राकृतिक व अवैज्ञानिक नहीं है, क्योंकि कुछ पशुओं में भी ऐसा देखा गया है।

समीक्षा– क्या कोई समलैंगिक बताएगा कि उसने कितने पशु पक्षियों को ऐसा करते देखा है? जिन घरेलू पशुओं को मनुष्य रात–दिन देखता है, क्या उनमें कोई ऐसा दिखता है? यदि कभी किसी रोगी पशु में ऐसा किसी ने देख भी लिया हो, तो वह इन कथित स्वच्छन्दों के लिए आदर्श बन गया। अरे! महाशय! पशु तो बहुत मर्यादित होते हैं। बिना ऋतुकाल के कोई नरपशु–पक्षी मादा के पास जाता भी नहीं । यदि साहस है, तो इनसे सीख लो। फिर यदि आपको उनसे यह न सीख कर गलत ही सीखना है, तो क्या पशुओं की तरह मादाओं के पीछे भागना, उनके लिए नरों का रक्तरंजित संघर्ष, खुले में निर्लज्ज यौन क्रीड़ा, बलवान् द्वारा दुर्बल को मार डालना आदि कर्मों की वैधानिकता को भी सर्वोच्च न्यायालय मानेंगे? इस समय सब लूटो, जो भी पाप लूटना है, सबके लिए संघर्ष करो, रैलियां करो, धरने–प्रदर्शन करो, क्योंकि अब स्वतंत्र भारत नहीं बल्कि स्वच्छन्द इण्डिया का लोकतंत्र (भीड़तंत्र) है। और सबके सिर पाश्चात्य की दासता रंग दिखा रही है। इस सभी दासों को मैं पूछता हूँ कि शरीर में यौन सम्बन्ध के लिए जनमांगों के अतिरिक्त कौन अन्य अंग विज्ञान के अनुकूल है? शोक है इन मूर्खों की विषयलम्पटता पर।

7. समलैंगिकता से चोरी छिपे करोड़ों बच्चे व बड़े ग्रस्त ही हैं, फिर क्यों न इसे अपराध की श्रेणी से बाहर

कर दिया जाए, जिससे करोड़ों लोग भय व लज्जा का जीवन जीने को बाध्य न हों।

समीक्षा– इस देश में अनेक पाप चोरी छिपे ही होते हैं, यथा–चोरी, रिश्वतखोरी, वस्तुओं में मिलावट, तस्करी, मिथ्या छल–कपट, नरबलि, पशुबलि, कुछ प्रकार के नशे आदि। इन्हें करने वाले भी डरे–सहमे ये कुकृत्य करते हैं। तब इन्हें भी क्यों न अपराध की श्रेणी से मुक्त कर दिया जाए, जिससे इन पापों को करने वाले भी चैन की सांस ले सकें। बोलो, क्या यही न्याय है?

इन सभी कुतर्कों का उत्तर देने के उपरान्त मैं **अपने सभी देशवासियों, जिन्हें इस देश की प्राचीन संस्कृति, सभ्यता व ज्ञान–विज्ञान से घृणा है तथा जिन्हें विदेशी दासता ही प्रतिशीलता की परिचायिकता प्रतीत होती है, से कहना चाहूंगा कि ऐसा कोई भी कथित प्रबुद्ध, जो स्वयं को बड़ा ज्ञानी, विज्ञानी व सभ्य मानता हो, मेरे पास आकर प्रीतिपूर्वक संवाद करके अपनी व मेरी निःसंकोच परीक्षा कर सकता है। मैं उसका स्वागत करूंगा।** हाँ, उसे अपने सभी अहंकारों व दुराग्रहों को त्याग कर आना होगा। इसके साथ ही यह सचेत करना चाहूंगा कि **यदि समलैंगिकता को अपराध की श्रेणी से मुक्त कर दिया, तो देश में विषयलम्पटता की ऐसी आग लगेगी, जो अच्छे बालक–बालिकाओं को भी अपनी लपटों में समेट लेगी। इससे पारिवारिक ढांचा छिन्न–भिन्न हो जायेगा। जब ये सारे समलैंगिक वृद्ध हो जायेंगे, तब इनकी सेवा कौन करेगा? विदेशों में तो सरकारें वृद्धाश्रम चला लेती हैं, यहाँ तो सड़–2 कर रोना और मरना ही होगा। सुशिक्षा व संस्कार भस्म हो जायेंगे। महिलाओं का जीवन और नरक बन जायेगा, नाना रोग फैलेंगे। सम्पूर्ण आकाश व मनस्तत्व में कामुकता की सूक्ष्म तरंगें नाना प्रकार के मानसिक व यौन रोगों को जन्म देंगी।** पारस्परिक सहमति के साथी न मिलने पर यौन अपराध बढ़ेंगे और यह इण्डिया अति निर्लज्ज पशुओं का देश हो जायेगा। जो महानुभाव आधुनिक मनोविज्ञान व पाश्चात्य शरीर विज्ञान के दम्भ में भारतीय ब्रह्मचर्य की शिक्षा पर व्यंग्य करते हैं, उन्हें पहले तो मैं दासता के आवरण से मुक्त होकर स्वतंत्र सोचने का परामर्श दूंगा और यदि वे दासतारूपी रोग को ही दवा समझे हों, तब मैं उन्हें प्रो. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार द्वारा लिखित एवं **विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, 4408, नईसड़क दिल्ली–110006** से प्रकाशित **'ब्रह्मचर्य सन्देश'** नामक पुस्तक पढ़ने का परामर्श दूंगा। इसमें विद्वान् लेखक ने विदेशी मानसिकता वालों के लिए अनेक विदेशी डॉक्टरों के महत्वपूर्ण वैज्ञानिक विचार दिए हैं।

यहाँ मैं अपने देश के कथित प्रबुद्ध व्यक्तित्वों से यह निवेदन करना चाहूंगा कि कुछ अनाड़ी व स्वच्छन्द बच्चे समलैंगिकता जैसी मानसिकता के शिकार बन जाएं एवं इसके पक्ष में सार्वजनिक रूप से खड़े दिखाई दें, यह बात तो समझ में आ सकती है, परन्तु जब देश के बड़े–2 कानूनविद्, पत्रकार, शिक्षाविद्, समाजशास्त्री, सर्वोच्च न्यायालय जैसे देश के गौरवपूर्ण न्याय के स्थान पर तथा समाचार पत्रों एवं टी. वी. चैनलों पर इसके समर्थन में खुली और निर्लज्ज बहस करें, तब नैतिकता, सदाचार, संयम, धर्मशीलता आदि सद्गुणों को आश्रय देने वाला इस देश में कौन बचेगा? और जो भी सज्जन

अपना मुख खोलेंगे, इस निर्लज्ज वातावरण में उनकी कौन सुनेगा। आज जो इण्डिया के प्रगतिशील माने जाने वाले महानुभाव समलैंगिकता की मांग करें, उन्हें स्वयं समलैंगिक विवाह करना चाहिए। पति-पत्नी को अपने-2 समलैंगिक साथी चुनने तथा वर्तमान वैवाहिक सम्बन्ध जोड़ देने चाहिए। इसके साथ ही अपनी सन्तान का भी ऐसा ही विवाह कराना चाहिए।

अन्त में स्वतंत्रता के पक्षधरों को आर्य समाज के संस्थापक, समाज व धर्म के महान् संशोधक, स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक, वेदों के महान् उद्धारक, सम्पूर्ण मानवजाति के सर्वोच्च हितैषी, अखण्ड ब्रह्मचारी एवं महान् योगी **महर्षि दयानन्द सरस्वती** का सन्देश बताना चाहूंगा-

"सब मनुष्यों को सामाजिक, सर्वहितकारी नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम पालने में सब स्वतंत्र रहें।"

ध्यानरहे कि समलैंगिकता समाज का विषय है, इसमें स्वतंत्रता कदापि स्वीकार्य नहीं, यह हितकारी कर्म कदापि नहीं है, इस कारण भी इसमें स्वतंत्रता नहीं दी जा सकती। यह समाज के लिए तीव्र गति से फैलने वाला विष है, जिसे हर हाल में रोकना ही होगा।

मुझे आशा है कि सभी विवेकशील जन मेरे लेख पर गम्भीरता से विचार कर कुपथ को त्याग सुपथ पर चलने का व्रत लेंगे। ईश्वर सबको ऐसी सुबुद्धि व शक्ति प्रदान करें। ❁

तपोभूमि मासिक के पाठकों से विनम्र निवेदन

'तपोभूमि' मासिक पत्रिका प्रतिमाह आप तक पहुँच रही है। हमारा हर सम्भव प्रयास यही रहता है कि पत्रिका में उच्चकोटि के विद्वानों के सारगर्भित लेख प्रकाशित करके आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सिद्धान्तों के अनुसार प्रचार करते हुये यह पत्रिका जन-जन तक पहुँचे। ताकि वे इसका पूर्णतया लाभ प्राप्त कर सकें। लेकिन यह तभी सम्भव है जब आप सबका सहयोग हमें मिले।

'तपोभूमि' मासिक के पाठको से निवेदन है कि जिन्होंने अपना वार्षिक शुल्क चालू वर्ष या पिछले वर्ष का शुल्क अभी तक नहीं भेजा है। वे शीघ्रातिशीघ्र शुल्क भिजवाने की व्यवस्था करें। वार्षिक शुल्क 150/- एक सौ पचास रुपये तथा पन्द्रह वर्ष हेतु 1500/- एक हजार पाँच सौ रुपये भेजकर पत्रिका पढ़ने का लाभ उठायें।

हम आपको प्रति माह पत्रिका पहुँचाते रहेंगे। आपके सहयोग व हमारे परिश्रम से निरन्तरता बनी रहेगी और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी व आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार जन-जन तक भी होता रहेगा।

हमें अपने ग्राहक महानुभावों से यही अपेक्षा है कि बिना विघ्न कार्य सुचारू रूप से चलता रहे। साथ ही यह भी प्रार्थना है कि आप अपने परिश्रम से नवीन ग्राहक बनवाने का सौभाग्य प्राप्त करें।

-धनराशि भेजने हेतु बैंक का नाम व पता एवं खाता संख्या-

इण्डियन ओवरसीज बैंक

शाखा युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, जयसिंहपुरा, मथुरा

I F S C Code- IOBA 0001441

'सत्य प्रकाशन' खाता संख्या- 144101000002341

दान हेतु- 'श्री विरजानन्द ट्रस्ट' खाता संख्या- 144101000000351

आर्यसमाज महेन्द्रगढ़ का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज महेन्द्रगढ़ हरियाणा का वार्षिकोत्सव उत्साहपूर्व वातावरण में 15 और 16 सितम्बर को सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में आचार्य स्वदेशजी महाराज मथुरा से आये। सभी लोगों को नित्य सन्ध्योपासना का संकल्प दिलाया, प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक वातावरण में यज्ञ का कार्य व प्रवचन हुए। ब्रह्मचारी राष्ट्रवसु के भजनों से जनमानस काफी प्रभावित हुआ। सभी जनपद के आर्यों ने उत्साहसहित भागीदारी की। प्रधानजी ने सबको धन्यवाद दिया, भोजन आदि की व्यवस्था सभी लोगों के लिए भी अतिउत्तम थी।

श्री भूदेव जी आर्य महात्मा देवमुनि बने

अलीगढ़ आर्यसमाज के प्राण व आर्यवीर दल के निष्ठावान सैनिक आदरणीय भूदेव आर्य जी ने निज निवास पर तीन दिन का कार्यक्रम रखा। श्री आचार्य जीवनसिंह जी ने अति सुन्दर यज्ञ कराया। श्री संदीप जी वैदिक मुजफ्फरनगर वालों के सुन्दर भजन हुए। स्वामी ब्रह्मानन्द जी बदायूं वालों ने ब्रह्मा का पद संभाला। अन्तिम दिन आदरणीय आर्य जी ने स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज से वानप्रस्थ की दीक्षा ली और अपना नया नाम महात्मा देवमुनि रखा। सभी आर्यों ने करतलध्वनि से स्वागत किया। इस अवसर पर मथुरा से पधारे आचार्य स्वदेशजी और गार्गी कन्या गुरुकुल के संचालक स्वामी चेतनदेव जी ने प्रवचन के माध्यम से आशीर्वाद दिया।

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद (म0 प्र0)

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय नर्मदापुरम्, होशंगाबाद (म0 प्र0) का 107 वां वार्षिकोत्सव दिनांक 07 से 09 दिसम्बर 2018 तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। जिसमें देश के ख्यातनाम विद्वान्, उपदेशक, संन्यासी, राजनेता पधारकर मार्गदर्शन करेंगे। आप सभी गुरुकुल प्रेमीजन, धार्मिक महानुभाव समारोह में सादर आमंत्रित पधारकर धर्म लाभ लेवें। विशेष जानकारी हेतु निम्न नम्बरों पर **सम्पर्क करें– 9424471288, 9907056726**

विश्व सेवा– विश्व सेवा हमारे बुराई रहित होने से बनेगी, क्योंकि किसी को भी बुराई पसन्द नहीं। बुराई रहित होते ही भलाई स्वतः होने लगती है।

समाज सेवा– प्राप्त सामर्थ्य, वस्तु व योग्यता को समाज की भलाई में लगाने से बनेगी।

परिवार सेवा– राग–निवृत्ति के लिए परिवार की सेवा करें परन्तु ध्यान रहे समाज को हानि पहुँचाकर परिवार की सेवा न करें।

॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

श्री विरजानन्द ट्रस्ट, वेदमन्दिर–मथुरा में चतुर्वेद पारायण यज्ञ

दिनांक 6 दिसम्बर 2018 से 25 दिसम्बर 2018 तक

सभी धर्मप्रेमी सज्जनों!

परमपिता परमात्मा हम लोगों के माता–पिता के समान हैं। हम सब उसकी प्रजा हैं इसलिए हम सब पर वह नित्य कृपादृष्टि रखता है। जैसे अपनी सन्तानों के ऊपर माता–पिता सदैव करूणा को धारण करते हैं। वह चाहते हैं कि हमारी सन्तान सदा सुखी रहे, वैसे ही परमात्मा भी सब जीवों पर कृपादृष्टि सदैव रखता है। बिना ज्ञान के हमारा कल्याण कभी सम्भव नहीं है। इसलिए सृष्टि के आदि में ईश्वर ने अपने ज्ञान ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद का प्रकाश चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा के मन में किया फिर उन्होंने सब भूगोल में वेद विद्या को फैलाया। जिनको पढ़–पढ़ा, सुन–सुना के हमारे पूर्वज ऋषि–मुनियों ने धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि को प्राप्त किया। उससे परम ज्ञान प्राप्त करके अपने मानव जीवन को धन्य कर गये। इसी प्रकार सबका जीवन धन्य हो इस परोपकार को ध्यान में रखकर आपके अपने श्री विरजानन्द आर्ष गुरुकुल वेदमन्दिर मथुरा में विगत 8 वर्षों से प्रतिवर्ष चतुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन रखा जाता है। विद्वानों के प्रवचनों से वेद–ज्ञान की प्राप्ति और साथ में पवित्र सामग्री से वातावरण शुद्धि का उपाय किया जाता है। इस वर्ष भी आयोजन 6 दिसम्बर से 25 दिसम्बर 2018 तक निर्धारित किया है। धार्मिक कार्य सर्वसाधारण के कल्याण की कामना को करके आयोजित किये जाते हैं। यदि उनमें सभी सज्जनों का सहयोग नं हो तो उनका पूरा होना असम्भव है यदि सम्भव हो भी जाय तो सबका उपकार न होने से निरर्थक भी है। इस आयोजन की सार्थकता आप सबके ऊपर ही है और आप सबका है। इस बात को ध्यान में रखकर अपना पावन दायित्व समझकर स्वयं यजमान बनें और अन्य सज्जनों को प्रेरित कर पुण्य लाभ कमायें। कार्यक्रम प्रतिदिन दो सत्रों में चलेगा प्रातः 9 बजे से 11.30 बजे तक दोपहर 2 बजे तक। आप किसी भी दिन किसी भी सत्र में यजमान बन सकते हैं। यजमान बनने के इच्छुक अपनी तिथि पहले ही लिखवा दें तो उत्तम रहेगा। यज्ञ में निरन्तर रहने वालों के लिए आवासीय व्यवस्था आश्रम में ही रहेगी। **सम्पर्क सूत्र–9456811519**

– निवेदक –

डॉ0 सत्यप्रकाश अग्रवाल	**ब्रजभूषण अग्रवाल**	**आचार्य स्वदेश**
(अध्यक्ष)	(मंत्री)	(अधिष्ठाता)

विशेषः गुरूकुल में आने के लिए मथुरा आकर वृन्दावन जाने वाले वाहनों से मसानी चौराहे पर उतरें, पूर्व की ओर जाने वाले मार्ग पर मात्र 200 कदम पर वेदमन्दिर है।

स्वीकार करते हुए लिखा है कि मेरे निर्बल हृदय के अतिरिक्त कौन मरण धर्मा मनुष्य यह जान सकता है कि कितनी बार गिरते-गिरते तुम्हारे स्मरण मात्र ने मेरी आत्मरक्षा की है, तुमने कितनी गिरी हुई आत्माओं की काया पलट दी इसकी गणना कौन कर सकता है? परमात्मा के बिना। कौन कह सकता है? तुम्हारे उपदेशों से निकली हुई अग्नि ने संसार में प्रचलित कितने पापों को दग्ध कर दिया, परन्तु अपने विषय में मैं कह सकता हूँ कि तुम्हारे एक उपदेश ने ही मुझ पतित को कल्याण पथ का राही बना दिया। सज्जनो! यह सब उनकी सत्य के प्रति श्रद्धा पर उनकी ही लेखनी के द्वारा निकले विचारों का रसास्वादन कीजिये।

यह और वह दोनों का ही मेल नैतिक जीवन में अनुभव होता है। संसार को स्वप्नवत् समझने वाले मनमाने ब्रह्मज्ञानी को भी शारीरिक तथा मानसिक क्लेश, झटका देकर जगा देते हैं। तब पता लगता है कि यह और है और वह और। यह शरीर परिवर्तनशील, नाशवान् और वह एक रस, अनादि, अनन्त। आकाश और पाताल का अन्तर है। परन्तु वह इन आंखों से दिखाई नहीं देता, इन कानों से सुनाई नहीं देता, इन इन्द्रियों से ग्राह्य नहीं और ग्राह्य हो भी कैसे हो सकता है? जो इन्द्रियों का विषय न हो, जो मन के वश में न आने वाला हो, जो बुद्धि से भी परे हो, जो सूक्ष्म वस्तुओं से भी अधिक सूक्ष्म हो, उसे कौन मरण धर्मा प्राणी अपनी परिमित बुद्धि की सीमा में बाँध सकता है?

तब विश, तपहीन, गिरा हुआ मनुष्य और भी नीचे गिर जाता है। एक ओर अपनी निर्बलताओं का ज्ञान और दूसरी ओर आश्रय का अभाव देखकर उसे चारों ओर अन्धकार प्रतीत होता है। हाय प्रकाश! हाय प्रकाश! यह आर्त्तनाद आकाश में गूंजने लगता है।

यह भयानक अवस्था संसार को डाबांडोल कर देती है। एक का विलाप सैकड़ों की शान्ति का नाश करने के लिये पर्याप्त है। तो क्या करोड़ों का मानसिक रोना पशु-पक्षी तथा वनस्पति तक के हृदय को न दहलाता होगा?

यह दीन दशा संसार की देखकर उसका ज्ञान रखने वाले उसी का नित्य दर्शन करने वाले तथा उसी में अपने आपकी स्थिति समझने वाले ज्ञानियों के हृदय करुणारस की मूर्ति बन जाते हैं। तब वे अपने गिरे हुए भाईयों को उठाने के लिए ज्ञान की बाहु पसार देते हैं। भाईयों को उठाने की प्रबल इच्छा भी है, उसके लिये प्रयत्न भी है, किन्तु केवल ज्ञानरूपी बाहु अशक्त सिद्ध होती है। उठाने के स्थान में वे गिरे हुए आत्मा, उस ज्ञानरूपी बाहु को खींचने लगते हैं, उस समय सरस्वती का विकास होता है और इसकी प्रदान की हुई श्रद्धारूपी अमृतधारा का स्रोत खुल जाता है। मरते हुओं को जीवन का आनन्द आ जाता है और वे अपने उठाने वाले ज्ञानी बड़े भाई को स्वयं उठने में सहायता देते हैं और तब भाई-2 के हाथ में हाथ दिये जीवन से भरपूर एक होकर कहते हैं।

श्रुति मात्ररसः सूक्ष्माः प्रधानः पुरुषेश्वरः।
श्रद्धा मात्रेण गृह्यन्ते न करेण न चक्षुषा।।
श्रद्धा विधि समामुक्त धर्म यत्क्रियते नृभिः।
स विशुद्धेन भावेन तदानन्त्याय कल्पते।।

❀❀❀

सत्य प्रकाशन मथुरा के अनमोल प्रकाशन

शुद्ध रामायण (सजिल्द)	220.00
शुद्ध रामायण (अजिल्द)	170.00
शंकर सर्वस्व	120.00
मानस पीयूष (रामचरित मानस)	100.00
शुद्ध कृष्णायण (प्रेस में)	
विदुर नीति	40.00
वैदिक स्वर्ग की झांकियाँ	40.00
चाणक्य नीति	40.00
महाभारत के प्रेरक प्रसंग	40.00
नित्य कर्म विधि	32.00
वेद प्रभा	30.00
शान्ति कथा	30.00
भारत और मूर्ति पूजा	30.00
यज्ञमय जीवन	30.00
दो बहिनों की बातें	30.00
दो मित्रों की बातें	30.00
संगीत रत्नाकर प्रथम भाग	25.00
चार मित्रों की बातें	20.00
भारतीय संस्कृति के तीन प्रतीक	20.00
मील का पत्थर	20.00
भ्रांति दर्शन	20.00
शान्ता	20.00
संध्या रहस्य	20.00
गीता तत्व दर्शन	20.00
गृहस्थ जीवन रहस्य	20.00
श्रीमद् भगवत गीता	20.00
दयानन्द और विवेकानन्द	15.00
इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ	12.00
बाल मनुस्मृति	12.00
ओंकार उपासना	12.00
आर्यों की दिनचर्या	12.00
शुद्ध सत्यनारायण कथा (प्रेस में)	
दादी पोती की बातें	10.00
दण्डी जी का जीवन पथ	10.00
क्या भूत होते हैं (प्रेस में)	
महाभारत के कृष्ण	8.00
ब्रजभूमि और कृष्ण	8.00
सच्चे गुच्छे	8.00
मृतक भोज और श्राद्ध तर्पण	8.00
वृक्षों में जीव है या नहीं	5.00
गायत्री गौरव	5.00
महर्षि दयानन्द की मान्यतायें	5.00
सफल व्यक्तित्व	5.00
जीजा साले की बातें	5.00
विषपान और अमृत दान	5.00
पंचाग के गुलाम	5.00
सर्वश्रेष्ठ कहानियां (प्रेस में)	
नमस्ते ही क्यों (प्रेस में)	
महिला गीतांजलि (प्रेस में)	
पुराणों के कृष्ण (प्रेस में)	
भागवत के नमकीन चुटकुले (प्रेस में)	
आदर्श पत्नी (प्रेस में)	
मानव तू मानव बन (प्रेस में)	
ऋषि गाथा	4.00
सर्प विष उपचार	4.00
चूहे की कहानी	4.00
उपासना के लाभ	4.00
भगवान के एजेन्ट	3.00
दयानन्द की दया	3.00
शांति पथ	2.00

आवश्यक सूचना

1. पाठकगण वर्ष 2019 के लिये वार्षिक शुल्क 150/- रूपये अविलम्ब भिजवायें तथा पन्द्रह वर्ष की सदस्यता हेतु 1500/- भिजवायें।
2. पत्रिका भेजने की तारीख प्रतिमाह 7 व 14 है, कृपया ध्यान रखें।

बुक-पोस्ट
छपी पुस्तक/पुस्तिका

सेवा में,

....

....

....

....

.... पिन कोड ....

पत्र व्यवहार का पता :-
व्यवस्थापक - कन्हैयालाल आर्य
सत्य प्रकाशन
डाकघर- गायत्री तपोभूमि, वृन्दावन मार्ग
(आचार्य प्रेमभिक्षु मार्ग), मसानी चौराहे के पास,
मथुरा (उ० प्र०) 281003
फोन (0565) 2406431
मोबा. 9759804182

Yogendra # 9927136600

मुद्रक : स्वामी, प्रकाशक, सम्पादक आचार्य स्वदेश के लिए मित्तल कम्प्यूटर प्रिंटर्स, वृन्दावन रोड, मथुरा में छपकर सत्य प्रकाशन मथुरा से प्रकाशित